mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-136 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

19 मई 2025 सोमवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

प्रधानमंत्री ने की .. @ पेज 7

ज्योति मल्होत्रा के बाद अब यूट्यूबर प्रियंका सेनापति से भी पूछताछ

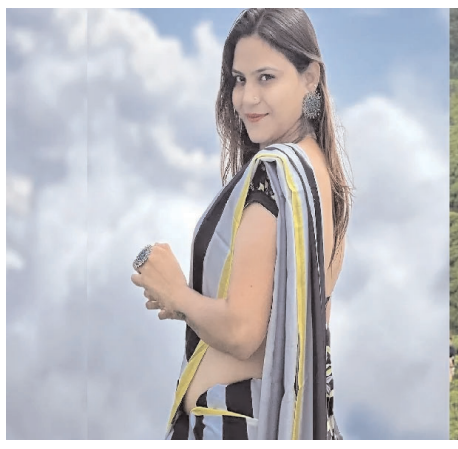

नई दिल्ली (एजेंसी)। , सोशल मीडिया पर मशहूर यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा को पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। ये गिरफ्तारी हिसार पुलिस द्वारा कई महीनों की निगरानी और जांच के बाद की गई। साथ ही छह

● पुरी में हुई थी दोनों की मुलाकात, सुरक्षा एंजेसियां अलर्ट

अन्य लोगों को भी गिरफ्तार किया गया है। ज्योति मल्होत्रा के जासूसी के तार अब ओडिशा के पुरी से भी जुड़ रहे हैं।

जांच में पता चला है कि ज्योति मल्होत्रा कई सालों से भारतीय सेना और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी गोपनीय जानकारी दुश्मन देश पाकिस्तान को भेज रही थीं। सबसे गंभीर बात ये है कि ज्योति ने लगभग 4 महीने पहले ओडिशा के पुरी का दौरा किया था, जहां उन्होंने जगन्नाथ मंदिर और अन्य अहम स्थानों की फोटो और वीडियो ली। इससे सुरक्षा एजेंसी अब अलर्ट हो गई हैं।

संवेदनशील इलाके और सरकारी संस्थानों की जुटाई थी जानकारी: जानकारी के अनुसार, आशंका जताई जा रही है कि ज्योति ने पुरी में रहकर कुछ संवेदनशील इलाके और सरकारी संस्थानों से जुड़ी जानकारी इकट्ठा कर डिजिटल टूल्स की मदद से पाकिस्तान भेजी हो सकती है।

यूट्यूबर प्रियंका सेनापति से भी पूछताछ: इसी सिलसिले में पुरी की यूट्यूबर प्रियंका सेनापति से पूछताछ की जा रही है। प्रियंका और ज्योति की यूट्यूब के जरिए जान-पहचान हुई थी। जांच एजेंसियां यह पता लगाने में जुटी हैं कि प्रियंका की भूमिका सिर्फ एक दोस्त तक सीमित थी या वह भी किसी तरह इस जानकारी के लेन-देन में शामिल थीं।

प्रियंका सेनापति ने दी सफाई :

इस पर प्रियंका सेनापति ने अपने सोशल मीडिया पोस्ट में सफाई देते हुए लिखा, ज्योति मेरी सिर्फ एक दोस्त थी और हमारी मुलाकात यूट्यूब के माध्यम से हुई थी। मुझे उनके ऊपर लगे आरोपों की कोई जानकारी नहीं थी। अगर मुझे पता होता कि वह देश के खिलाफ जासूसी कर रही हैं, तो मैं कभी संपर्क में नहीं रहती।

जांच एजेंसी को सहयोग करने का वादा: उन्होंने आगे लिखा, मैं उन्हें सिर्फ कंटेंट क्रिएशन के प्रोफेशनल दायरे में जानती थी और ये खबर सुनकर मैं खुद हैरान हूं। अगर किसी जांच एजेंसी को मुझसे कोई जानकारी चाहिए तो मैं पूरा सहयोग करूंगी।%

सुरक्षा एजेंसियां हैं चौकन्ना

इस मामले ने सुरक्षा एजेंसियों को चौकन्ना कर दिया है। सोशल मीडिया और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म पर सामान्य दिखने वाले कंटेंट क्रिएटर्स का इस तरह गंभीर अपराधों में शामिल होना चिंता का विषय बन गया है।

और भी हो सकती हैं गिरफ्तारियां: इस मामले में जांच अभी जारी है। उम्मीद जताई जा रही है कि आने वाले दिनों में और भी खुलासे और गिरफ्तारियां हो सकती हैं। साथ ही सरकार अब डिजिटल निगरानी को और सख्त करने की तैयारी में है, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके।

संक्षिप्त समाचार

भारत के ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाक विदेश मंत्री करेंगे चीन की पहली यात्रा

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री इशाक डार आगामी सोमवार को चीन की यात्रा पर रवाना होंगे, जहां वे चीनी विदेश मंत्री वांग यी के साथ महत्वपूर्ण द्विपक्षीय वार्ता करेंगे। इसके साथ ही, अफगानिस्तान के कार्यवाहक विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी भी इस त्रिपक्षीय बैठक में भाग लेने के लिए 20 मई को चीन पहुंचेंगे। पाकिस्तान में भारत के ऑपरेशन सिंदूर के बाद डार की यह पहली चीन यात्रा होगी। पाकिस्तानी प्रसारणकर्ता जियो न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, यह त्रिपक्षीय बैठक क्षेत्रीय व्यापार, सुरक्षा सहयोग को मजबूत करने और हालिया घटनाक्रमों विशेषकर भारत-पाकिस्तान के बीच हाल के सैन्य तनाव के आलोक में क्षेत्रीय स्थिरता की रणनीति पर केंद्रित होगी। इस उच्चस्तरीय राजनयिक मुलाकात की पृष्ठभूमि भारत और पाकिस्तान के बीच 10 मई

को हुए संघर्ष विराम समझौते की है। इससे पहले, दोनों देशों के बीच चार दिनों तक परस्पर ड्रोन और मिसाइल हमले हुए थे । भारत ने 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के जवाब में 7 मई की सुबह ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान और पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर में स्थित आतंकी ठिकानों पर सटीक हमले किए थे, जिसमें 100 से ज्यादा आतंकियों की मौत हुई थी। इसके बाद पाकिस्तान ने 8 से 10 मई के बीच भारतीय सैन्य ठिकानों को निशाना बनाने की कोशिश की, जिससे क्षेत्र में तनाव चरम पर पहुंच गया था। दोनों देशों ने अंततः संघर्ष को रोकने पर सहमति जताई, जिसे चीन ने ÷दोनों देशों के दीर्घकालिक और मौलिक हित में÷ बताते हुए स्वागत किया।

पोप लियो 14वें दुनिया को दिया संदेश, पूरे विश्व को एकता के लिए काम करने की प्रतिबद्धता जताई

वेटिकन सिटी (एजेंसी)। कैथोलिक चर्च के इतिहास में पहली बार अमेरिका से चुने गए पोप लियो 14वें (उम्र 69) ने शनिवार को एक भव्य प्रार्थना सभा में दुनिया में एकता और शांति के लिए काम करने की प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने सेंट पीटर्स स्क्वायर में आयोजित समारोह में कहा कि चर्च को एकजुटता का प्रतीक बनाना उनकी प्राथमिकता है। हजारों श्रद्धालुओं, कार्डिनलों, बिशपों और पादरियों

की उपस्थिति में पोप लियो ने कहा, ÷मैं चाहता हूं कि हमारी पहली बड़ी इच्छा एक संयुक्त चर्च की हो, जो एकता का प्रतीक हो, जो मेल-मिलाप वाली दुनिया के लिए एक उदाहरण बन जाए।÷ उन्हें इस मौके पर पारंपरिक धार्मिक वस्त्र और पोंटिफिकल अंगूठी प्रदान की गई, जो पोप बनने का प्रतीक होती है। उन्होंने अंगूठी को सम्मानपूर्वक देखा और फिर हाथ जोड़कर प्रार्थना की। इस ऐतिहासिक अवसर पर वेटिकन में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई थी। दिवंगत पोप फ्रांसिस से मिलने वाले अंतिम विदेशी नेताओं में से एक अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने अर्जेंटीना के पोप की समाधि पर श्रद्धांजलि अर्पित की और शिकागो में जन्मे पोप लियो 14वें को सम्मानित करने के लिए अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। उनके साथ अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो भी मौजूद थे।

मिथुन चक्रवर्ती की बढ़ीं मुश्किलें, मुंबई नगर निगम ने भेजा नोटिस

मुंबई (एजेंसी)। बॉलीवुड स्टार मिथुन चक्रवर्ती की मुश्किलें बढ़ गई हैं। बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) ने मिथुन चक्रवर्ती को उनके मलाड परिसर में ग्राउंड और मेजेनाइन फ्लोर के कथित अनधिकृत निर्माण के लिए कारण बताओ नोटिस भेजा है। मेजेनाइन फ्लोर एक आंशिक फ्लोर होता है, जो आम तौर पर दो फ्लोर के बीच बनाया जाता है।

अभिनेता ने जवाब में क्या कहा? अपने जवाब में, अभिनेता ने दावा किया कि उन्हें मलाड के एरंगल में चल रहे बीएमसी अभियान के तहत नोटिस मिला है, जहां उनका परिसर स्थित है। उन्होंने कहा, मेरे पास कोई अवैध या अनधिकृत निर्माण नहीं है। सभी को नोटिस भेजा गया है, हम उनका जवाब दे रहे हैं।

10 मई को जारी किए गए कारण बताओ नोटिस के अनुसार, मुंबई नगर निगम ने अभिनेता को अनधिकृत निर्माण के लिए मुंबई नगर निगम अधिनियम की धारा 475 ए के तहत मुकदमा चलाने की चेतावनी दी है। धारा 475 ए किसी भी अनधिकृत निर्माण को हटाने में विफल रहने पर दंड से संबंधित है। नोटिस में दो भूतल इकाइयों के साथ मेजेनाइन स्तर और तीन अस्थायी 10×10 इकाइयों का उल्लेख किया गया है, जो ईंट की चिनाई वाली दीवारों, लकड़ी के तख्तों, कांच के विभाजन और एसी शीट की छत के संयोजन का उपयोग करके बनाई गई हैं। नोटिस के अनुसार, ये निर्माण बिना अनुमति के किए गए थे।

पाकिस्तान को दी साफ चेतावनी

पापियों के विनाश के लिए तैयार है इंडियन नेवी, याचना नहीं, अब ...

गांधीनगर (एजेंसी)। इंडियन आर्मी के साथ ही भारतीय नौसेना ने भी वीडियो जारी कर पाकिस्तान को साफ संदेश दिया है। इंडियन नेवी ने वीडियो जारी कर समंदर के वॉरशिप का जबरदस्त एक्शन दिखाया है। भारतीय सेना का ऑपरेशन सिंदूर अभी जारी है। इस बीच, इंडियन नेवी ने दुश्मन देश पाकिस्तान को चेतावनी दी है कि याचना नहीं, अब रण होगा....

नौसेना भारत की रक्षा में हमेशा मुस्तैद है। हर खतरे को मिटाने में सक्षम है। नेवी ने वीडियो के कैप्शन में गीता का श्लोक भी लिखा है। परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्... इसका हिंदी में अर्थ है, साधुओं (भक्तों) की रक्षा के लिए और दुष्टों (पापियों) के विनाश के लिए।

इंडियन नेवी के लिहाज से पाकिस्तान को साफ संदेश दिया गया है कि देश की रक्षा और दुष्टों के विनाश के लिए भारतीय नौसेना हमेशा तैयार है। वह मोदी सरकार के एक इशारे पर पाकिस्तान के कई ठिकानों को तबाह

कर सकती है। इंडियन नेवी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर वीडियो अपलोड करते हुए लिखा, साहस और कर्तव्य को अपना मार्गदर्शक मानते हुए, भारतीय नौसेना शांति सुनिश्चित करने और सभी खतरों को नष्ट करने के लिए तैयार है। इंडियन नेवी ने अपने इस वीडियो में राष्ट्र कवि दिनकर की एक कविता याचना नहीं, अब रण होगा.... की पंक्तियां भी लिखी हैं।

नहर में कूदकर सिपाही ने बचाई महिला की जान, खुद कीचड़ में फंसा; हुई मौत

गाजियाबाद (एजेंसी)। यूपी के गाजियाबाद में एक सिपाही की नहर में डूबने से मौत हो गई। जानकारी के मुताबिक एक महिला ने नहर में कूदकर जान देने की कोशिश की। इस घटना को देखते ही पास में मौजूद यूपी पुलिस का एक सिपाही उसे बचाने के लिए नहर में कूद गया। सिपाही ने कड़ी मशक्कत करके महिला की जान बचा ली। हालांकि वह खुद नहर में मौजूद कीचड़ में फंस गया, जिससे उसकी पानी में डूबने से मौत हो गई। वहां मौजूद लोगों ने सिपाही को बचाने की कोशिश भी की, लेकिन उसे नहीं बचाया जा सका। फिलहाल शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पुलिस ने घटना के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि वैशाली सेक्टर 2 की रहने वाली महिला ने हिंडन नहर में छलांग लगा दी। ये महिला मूल रूप से मेरठ के सरधना की रहने वाली थी। वहीं महिला की पहचान आरती के रूप में हुई है। आरती ने छह महीने पहले आदित्य नाम के शख्स ने प्रेम विवाह किया था। हालांकि शादी के बाद से दोनों के रिश्ते ठीक नहीं थे। घटना की सुबह आरती का उसके पति के साथ किसी बात को लेकर झगड़ा हुआ था। इससे नाराज होकर आरती नहर में कूद गई।

हैदराबाद में चारमीनार के पास इमारत में कैसे लगी भीषण आग

झुलसकर 17 लोगों की मौत

हैदराबाद (एजेंसी)। हैदराबाद के चारमीनार के पास गुलज़ार हाउस में एक इमारत में आग लगने की घटना शॉर्ट सर्किट के कारण हुई थी, अग्निशमन विभाग द्वारा घटना की प्रारंभिक जांच से पता चला है। रविवार सुबह गुलज़ार हौज़ इलाके में एक रिहायशी इमारत में आग लग गई, जिसमें झुलसकर 17 लोगों की मौत हो गई। तेलंगाना आपदा प्रतिक्रिया और अग्निशमन सेवा महानिदेशक वाई नागी रेड्डी के एक बयान के अनुसार, प्रारंभिक जांच से पता चला है कि आग का कारण शॉर्ट सर्किट था। एएनआई समाचार एजेंसी ने रेड्डी के हवाले से कहा, ÷प्रारंभिक जांच से पता चलता है कि आग का कारण शॉर्ट सर्किट था। सभी 17 लोगों की मौत का कारण धुएं में सांस लेना था, किसी के शरीर पर जलने के निशान नहीं पाए गए।

अग्निशमन अधिकारी ने कहा, आग बुझाने और लोगों को बचाने में अग्निशमन विभाग की कोई कमी नहीं थी... इमारत में सुरंग की तरह सिर्फ़ दो मीटर का एक प्रवेश द्वार था। पहली और दूसरी मंजिल तक पहुंचने के लिए सिर्फ़ एक मीटर की सीढ़ी है। इससे बचाव और बचाव अभियान बहुत मुश्किल हो गया। सुबह 9 बजे तक आग पर काबू पा लिया गया... इमारत के अंदर कुल 21 लोग थे... मौत का कारण धुएं में सांस लेना

है; किसी को भी जलने की चोट नहीं आई है।

तेलंगाना अग्नि आपदा प्रतिक्रिया आपातकाल और नागरिक सुरक्षा द्वारा जारी 17 मृतकों की सूची में 10 वर्ष से कम आयु के आठ बच्चों के नाम शामिल हैं। सूची में सबसे कम उम्र के बच्चे की पहचान 1.5 वर्षीय प्रथान के रूप में हुई है। सात अन्य बच्चों की पहचान 7 वर्षीय हमी, 4 वर्षीय प्रियांश, 2 वर्षीय इराज, 3 वर्षीय आरुषि, 4 वर्षीय ऋषभ, 3 वर्षीय अनुयान और 4 वर्षीय इद्रू के रूप में हुई है।

क्या वह उन्हें फोन नहीं कर सकती?

'पाकिस्तानी जासूस' यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा के पिता ने किए कई सवाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। हरियाणा के हिसार की रहने वाली यूट्यूबर और कथित पाकिस्तानी जासूस ज्योति मल्होत्रा के पिता हरीश मल्होत्रा ने अपनी बेटी की गिरफ्तारी के बाद बड़ा बयान दिया है। हरीश मल्होत्रा ने कहा कि उनकी बेटी वीडियो शूट करने के लिए पड़ोसी देश गई थी और उन्होंने सवाल किया कि अगर वह ऐसा करना चाहती थी तो वह देश में रहने वाले अपने दोस्तों से संपर्क क्यों नहीं कर सकती थी। एएनआई न्यूज एजेंसी ने मल्होत्रा के हवाले से बताया, ÷उसने यूट्यूब वीडियो बनाए। वह पाकिस्तान और दूसरी जगहों पर जाती थी। अगर वहां उसके कुछ दोस्त हैं, तो क्या वह उन्हें फोन नहीं कर सकती? मेरी कोई मांग नहीं है, लेकिन हमें हमारे फोन दे दीजिए। हमारे खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। उन्होंने कहा कि उनकी बेटी ने पाकिस्तान जाने से पहले सभी जरूरी अनुमतियां ले ली थीं। हरियाणा पुलिस ने पाकिस्तानी एजेंसियों के लिए जासूसी करने के आरोप में हरियाणा के हिसार से ज्योति रानी मल्होत्रा को गिरफ्तार किया है। उनके पिता हरीश मल्होत्रा

ने बताया कि पुलिस गुरुवार को उनके घर आई और उनके बैंक दस्तावेज, फोन, लैपटॉप और पासपोर्ट सब जब्त कर लिए। हिसार के डीएसपी कमलजीत ने बताया कि पुलिस ने उनके मोबाइल और लैपटॉप से कुछ संदिग्ध चीजें बरामद की हैं। उनके मुताबिक ज्योति पाकिस्तानी अधिकारियों के साथ संवेदनशील जानकारी साझा कर रही थी। कमलजीत ने कहा, हमारे पास मौजूद इनपुट के आधार पर, हमने हरीश कुमार की बेटी ज्योति को आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम और बीएनएस की धारा 152 के तहत गिरफ्तार किया। हमें उसका मोबाइल और लैपटॉप बरामद करने के बाद कुछ संदिग्ध चीजें मिली हैं। हमने उसे पांच दिन की रिमांड पर लिया है, और आगे की जांच जारी है। वह लगातार एक पाकिस्तानी नागरिक के संपर्क में थी। डीएसपी ने कहा, उसने कथित तौर पर दिल्ली में पाकिस्तानी अधिकारी अहसान-उर-रहीम से मुलाकात की थी और फिर दो बार पाकिस्तान की यात्रा की थी।

सीएम के गांव में प्रशांत किशोर को जाने से रोका गया

प्रशासन ने बताई इसकी वजह

नालंदा (एजेंसी)। बिहार में अगले कुछ महीनों में विधानसभा के चुनाव हैं। ऐसे में चुनावी सरगर्मी बढ़ गई है। नालंदा जिले में सीएम नीतीश कुमार के गृह गांव कल्याण बिगहा में जन सुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर को जाने से रोक दिया गया। इस दौरान प्रशासन के लोगों के साथ प्रशांत किशोर की बहस भी हो गई।

गांव में रोके जाने पर प्रशांत किशोर ने कहा, प्रशासन ने मुझे 3 किलोमीटर के पूरे क्षेत्र में किसी भी गांव में जाने से नहीं रोका। लोगों ने मुझे बताया कि उन्हें लाभ नहीं मिल रहा है और उन्होंने भ्रष्टाचार की भी शिकायत की है। अब प्रशासन मुझे बता रहा है कि मैं कल्याण बिगहा नहीं जा सकता क्योंकि ऊपर से ऐसे आदेश हैं।

प्रशांत किशोर ने आगे कहा, हम कानून का पालन करने वाले लोग हैं और हम उनसे पूछते हैं कि अगर मैं आपके निर्देशों

का पालन नहीं करूंगा तो वे क्या करेंगे। उन्होंने कहा कि हमारे पास इस बारे में कोई आदेश नहीं है, हमें पहले पूछना चाहिए।

जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर ने कहा, नीतीश जी ने यहां अच्छी सड़कें बनाई हैं और ऐसा पूरे बिहार में होना चाहिए। यह बिहार में नई परंपरा शुरू हुई है, दो दिन पहले राहुल गांधी बिहार में थे। ऐसी चीजें बिहार में आम नहीं थीं। मुझे नहीं लगता कि नीतीश कुमार ऐसे आदेश दे सकते हैं, राज्य में अधिकारियों का जिस तरह का जंगल राज चल रहा है।

प्रशांत किशोर को कल्याण बिगहा में रोके जाने के संबंध मे नालंदा जिला प्रशासन की तरफ से बयान जारी किया गया है। प्रशासन ने कहा कि श्रम कल्याण मैदान बिहार शरीफ में जन सुराज पार्टी नालंदा के द्वारा जनसभा कार्यक्रम आयोजित किए जाने की अनुमति प्रदान की गई थी। प्रशासन ने कहा कि जनसुराज पार्टी के द्वारा अनुमति प्राप्त स्थल पर अपनी सभा न करके अन्य जगहों पर सभा और अभियान करने की कोशिश की गई। पार्टी के लोगों ने स्वयं अपने द्वारा दिए गए आवेदन का पालन नहीं किया।

मुस्लिम शिक्षिका पर गंभीर आरोप- हिंदू छात्र की काटी चोटी, तिलक मिटाया, टीसी भी काटी गई

मुजफ्फरनगर (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जनपद में एक मुस्लिम शिक्षिका फरहाना खातून पर छठी क्लास में पढ़ने वाले एक हिंदू छात्र की चोटी (शिखा) काटने और तिलक मिटाने का गंभीर आरोप लगा है। बताया जा रहा है कि पीड़ित छात्र के परिजन जब इसकी शिकायत लेकर स्कूल में उस शिक्षिका के पास पहुंचे तो उन्होंने छात्र की टीसी काटकर परिजनों के हाथ में थमा दी। इसके बाद पीड़ित परिजनों ने थाने पहुंचकर इस मामले की शिकायत करते हुए कार्रवाई की मांग की। मामला तितावी थाना क्षेत्र स्थित काजीखेड़ा गांव के पूर्व माध्यमिक विद्यालय का है। पीड़ित छात्र देवांश के अनुसार, वह नियमित रूप से तिलक लगाकर और पूजा करके स्कूल जाता था। उसने आरोप लगाया कि शिक्षिका फरहाना खातून ने उसे ऑफिस में बुलाया और कैंची से उसकी चोटी काट दी। इसके साथ ही, शिक्षिका ने उसे तिलक मिटाने के लिए भी कहा और धमकी दी कि यदि वह चोटी नहीं कटवाएगा तो वह उसे पढ़ाएंगी नहीं। इस घटना की जानकारी देवांश ने अपनी दीदी को दी। जब देवांश की दीदी इस शिकायत को लेकर स्कूल पहुंची, तो शिक्षिका ने बदतमीजी से बात की और अन्य बच्चों से भी कुछ कहलवाया। इसके बाद, शिक्षिका ने देवांश की टीसी यानी स्थानांतरण प्रमाण पत्र काटकर परिजनों को थमा दी।

आयुष विभाग की 108 संस्थाओं का आकस्मिक निरीक्षण

भोपाल। आयुक्त आयुष श्री संजय कुमार मिश्र के कुशल नेतृत्व में आयुष विभाग द्वारा अधीनस्थ आयुष औषधालयों की व्यवस्थाओं के व्यापक स्तर पर सुधार के लिये प्रदेश में संचालित आयुष औषधालयों के औचक निरीक्षण की कार्य-योजना का सफल क्रियान्वयन किया गया। औषधालय में आने वाले रोगियों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने के लिये चिकित्सा अधिकारियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आयुष विभाग की 108 संस्थाओं का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। कार्यक्रम के तहत प्रदेश भर में आयुष विभाग के संभागीय एवं जिला अधिकारियों द्वारा प्रात: 9 बजे से दो-दो औषधालयों का निरीक्षण किया गया। आयुक्त श्री मिश्र द्वारा शाम 5 बजे गूगल मीट के माध्यम से समस्त संभागीय आयुष अधिकारियों से निरीक्षण के दौरान औषधालयों में पायी गयी कमियों के संबंध में विस्तार से चर्चा की। औषधालयों में किस प्रकार व्यवस्थाओं को सुधार कर ओपीडी संस्था को बढ़ाया जा सकता है एवं रोगियों तक विभाग की पहुँच किस प्रकार बढ़ाई जा सकती है, उसके संबंध में आवश्यक निर्देश दिये। उन्होंने बताया कि औषधालयों में पदस्थ प्रदेश के समस्त चिकित्सकों के साथ वह वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से प्रत्यक्ष संवाद कर आयुष चिकित्सा पद्धति का लाभ प्रदेश के अधिक से अधिक जनमानस को उपलब्ध कराने के लिये विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया गया है।

मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन के एमडी ने इंदौर मेट्रो प्रायोरिटी कॉरिडोर का किया दौरा

भोपाल। मध्यप्रदेश मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन के एमडी श्री संकेत भोंडवे ने शुक्रवार को इंदौर मेट्रो सुपर प्रायोरिटी कॉरिडोर का मेट्रो ट्रेन से एससी-03 स्टेशन से गाँधी नगर स्टेडियम तक यात्रा की और स्थल का निरीक्षण किया। प्रबंध संचालक ने नगर निगम, इंदौर विकास प्राधिकरण, मेट्रो अधिकारियों, कंसलटेंट और परियोजना से जुड़े अधिकारियों के साथ चर्चा की।

नगरीय विकास आयुक्त श्री भोंडवे ने भ्रमण के दौरान सुविधाओं जैसे एन्ट्री-एक्जिट पॉइंट्स, टिकट काउंटर, सूचना प्रदर्शन प्रणाली, मेट्रो ट्रेन में यात्रियों संबंधी सुविधाएँ, आपातकालीन द्वार जैसी आवश्यक व्यवस्थाओं को देखा। उन्होंने कहा कि मेट्रो क्षेत्र के आसपास साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाये। श्री भोंडवे ने डिपो स्थल के आसपास बड़े पैमाने पर पौध-रोपण की योजना अभी से तैयार करने के लिये कहा।

एमडी श्री भोंडवे ने मेट्रो प्रोजेक्ट से जुड़े सभी अधिकारियों से कहा कि इंदौर मेट्रो की शुरूआत जन-आकांक्षाओं के अनुरूप हो। मेट्रो सर्विस से मध्यप्रदेश की पहचान राष्ट्रीय स्तर पर बनेगी। उन्होंने सम्पूर्ण मेट्रो क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों की जानकारी प्राप्त की। इंदौर मेट्रो का कार्य नगरीय विकास एवं आवास विभाग के अंतर्गत किया जा रहा है।

वूमन फॉर ट्री अभियान में प्रदेश की सशक्त भागीदारी

भोपाल। प्रदेश में केन्द्र सरकार के एक पेड़ माँ के नाम से प्रेरित होकर अमृत मित्र योजना के अंतर्गत वूमन फॉर ट्री पौध-रोपण अभियान का संचालन किया जा रहा है। यह अभियान मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देशन में क्रियान्वित किया जा रहा है। यह कार्यक्रम अमृत ??2.0 योजना एवं डे-एनयूएलएम के कन्वर्जेंस से संचालित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य नगरीय क्षेत्रों में हरित क्षेत्र का विस्तार, पर्यावरण संतुलन बनाये रखने, नागरिकों को स्वस्थ जीवन-शैली एवं महिला स्व-सहायता समूहों को आर्थिक आत्मनिर्भरता प्रदान करना है। वूमन फॉर ट्री अभियान के संचालन के लिये केन्द्र सरकार ने पोर्टल तैयार किया है।

सभी प्रदेशों से उन स्थानों का चयन करने के लिये कहा गया था, जिन स्थलों पर पौध-रोपण किया जायेगा। मध्यप्रदेश राष्ट्रीय

निगम कर्मियों और सिटी बस चालकों के लिये स्वास्थ्य शिविर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय भोपाल द्वारा विश्व उच्च रक्तचाप दिवस के अवसर पर जिले में विभिन्न स्थानों पर स्वास्थ्य जागरूकता, जांच, परामर्श एवं उपचार शिविर आयोजित किए गए। समाचार-पत्र वितरकों, नगर निगम कर्मियों, सिटी बस चालकों और बस कंडक्टर्स के लिए आयोजित इन विशेष शिविरों में 1115 हितग्रहियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। शिविरों में उच्च रक्तचाप, मधुमेह, हीमोग्लोबिन सहित विभिन्न जांच एवं उपचार निशुल्क दिया गया। साथ ही आभा आईडी एवं आयुष्मान कार्ड भी बनाए गए। शिविर में परिजनों का भी स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।

लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्य मंत्री श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने शिविर का अवलोकन किया। शहर के 6 स्थानों पर समाचार-पत्र वितरकों के लिए पहली बार स्वास्थ्य विभाग ने निजी अखबार समूह के साथ मिलकर स्पेशल कैंप लगाए हैं। शिविर में राज्य मंत्री श्री पटेल ने वितरकों से संवाद किया।

उन्होंने जिला स्वास्थ्य समिति भोपाल के इस नवाचार की सराहना करते हुए कहा कि पं. दीनदयाल उपाध्याय के अंत्योदय के सपने को साकार करने के लिए वंचित वर्ग तक पहुंचने का यह प्रयास प्रशंसनीय है। उच्च रक्तचाप साइलेंट किलर है, इसलिए नियमित तौर पर जांच करवाना जरूरी है। विभाग द्वारा 30 साल से अधिक उम्र के लोगों के लिए निःशुल्क स्क्रीनिंग, जांच और उपचार की व्यवस्था की गई है।

आईएसबीटी परिसर में आयोजित शिविर में 170 निगम कर्मियों और 85 सिटी बस चालकों और बस कंडक्टर्स का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। इनमें से 27 में उच्च रक्तचाप ओर 21 में बढ़ी हुई शर्करा मिली है। जिले के 6 स्थानों पर अखबार वितरकों के लिए लगाए गए शिविरों में 860 लोगों के स्वास्थ्य परीक्षण में 96 उच्च रक्तचाप और 72 में बढ़ी हुई शर्करा मिली है। जिन्हें उपचार, दैनिक जीवनचर्या में परिवर्तन खान-पान में सावधानी एवं नियमित फॉलोअप की सलाह दी गई। शिविर में 45 आयुष्मान कार्ड और 118 आभा आईडी बनाई गईं।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ. प्रभाकर तिवारी ने शिविर आयोजन में नगर निगम एवं मीडिया संस्थानों को सहयोग ज्ञापित करते हुए बताया कि हार्ट अटैक और ब्रेन स्ट्रोक के खतरों को कम करने का पहला कदम नियमित जांच और रक्तचाप को नियंत्रित करना है। उच्च रक्तचाप की जांच बेहद आसान और शासकीय स्वास्थ्य संस्थाओं में निशुल्क भी है।

विभाग द्वारा समाज के विभिन्न वंचित वर्गों तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने के प्रयास निरंतर किया जा रहे हैं। बीमारियों का चिन्हांकन कर नियमित फॉलोअप नजदीकी स्वास्थ्य संस्था के माध्यम से करवाया जा रहा है। आवश्यकता को देखते हुए फॉलोअप कैंप भी आयोजित किए जाएंगे।

सैनिकों के सम्मान में मंच से हुये नतमस्तक उप मुख्यमंत्री देवड़ा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा ने देवास में तिरंगा यात्रा में कहा कि आज लोगों में आतंकवादियों द्वारा पहलगाम में की गई कायराना हरकत पर गुस्सा है। देश की जनता को सेना पर अटूट विश्वास है। देश के सैनिकों के सम्मान में तिरंगा यात्रा पूरे देश में निकल रही है। पहलगाम में जो कुछ हुआ उसका जवाब भारत के सैनिकों ने दिया। हम नतमस्तक हैं भारत के इन सैनिकों के सम्मान में, प्रणाम हैं उनके चरणों में। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि 22 अप्रैल को जो हुआ वो पूरे देश की जनता ने देखा है। धर्म पूछ-पूछ कर के पहले बेटियों के सामने, पत्नी के सामने आतंकवादियों ने गोलियाँ चलाईं। देश के

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने हमारी तीनों सेनाओं को आतंकियों के विरुद्ध कार्रवाई की छूट दी। उन्होंने कहा कि धन्य है हमारी सेना के ऊपर गर्व करते हैं हमारी सेना के ऊपर।उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि भारत माँ के स्वाभिमान और गौरव को बनाये रखने के लिये अगर एक एक नागरिक की भी जरूरत पड़ी देश के लिये राष्ट्र के लिये एक एक नागरिक राष्ट्र के लिये समर्पित हो जायेगा। राष्ट्र के लिये अपने प्राणों की आहुति भी देना पड़े तो देंगे।

हर हते दें निर्माण कार्य प्रगति की प्रोग्रेस रिपोर्ट : मंत्री सारंग

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खेल और युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने शनिवार को टी.टी. नगर स्टेडियम, भोपाल में खेल और युवा कल्याण की बैठक में नाथू बरखेड़ा में निर्माणाधीन अंतर्राष्ट्रीय स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के कार्य के प्रगति की समीक्षा की। मंत्री श्री सारंग ने हो रहे स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के निर्माण कार्य की डिजाइनिंग और ले-आउट में और आवश्यक सुधार के निर्देश दिए। उन्होंने चिन्हित मल्टीलेवल पार्किंग के स्थान पर एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक बनाने एवं ओपन पार्किंग की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने हर हफ्ते निर्माण कार्य प्रगति की प्रोग्रेस रिपोर्ट प्रस्तुत करने के भी निर्देश दिए। बैठक में खेल संचालक श्री राकेश कुमार गुप्ता, संयुक्त संचालक श्री बी.एस. यादव, कांट्रेक्टर,

कंसल्टेंट, आर्किटेक्ट, इंजीनियर्स, प्रोजेक्ट मैनेजर सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

मंत्री श्री सारंग ने कहा कि स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में चल रहे निर्माण कार्य की डिजाइन और ले-आउट में किसी भी प्रकार की लापरवाही या गुणवत्ता में कमी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने शीघ्र ही सभी आवश्यक सुधार के बाद तय समय-सीमा में निर्माण कार्य को पूर्ण करने के निर्देश दिए।

मंत्री श्री सारंग ने जल आपूर्ति एवं भंडारण की क्षमता, सीवेज, फायर सेफ्टी, सर्वर रुम, कैफेटेरिया, मीटिंग हॉल एवं साइनेज की व्यवस्था का प्रॉपर प्लॉन तैयार कर उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि सभी बुनियादी सुविधाएं विश्वस्तरीय मानकों के अनुरूप सुनिश्चित की जा सकें इसके लिए विस्तृत प्लान भी तैयार किया जा रहा है।

तंग बदबूदार गलियों में आंगनबाड़ी केंद्र...

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने एक साल पहले शहरी क्षेत्रों में संचालित आंगनवाड़ी केंद्रों के लिए किराया बढ़ाकर 6 हजार रुपए प्रतिमाह कर दिया था। मप्र कैबिनेट ने भी इसे मंजूरी दे दी थी। लेकिन वास्तव में आज भी केंद्रों के लिए ढाई से तीन हजार रुपए ही किराया मिल रहा है, जो महंगाई के लिहाज से बहुत कम है।

प्रदेश के कुल 97,000 आंगनवाड़ी केंद्रों में से 34,000 से ज्यादा किराये के भवन में संचालित हैं। किराया कम होने से अधिकतर केंद्र स्लम बस्तियों की तंग-बदबूदार गलियों में चल रहे हैं। इनमें न तो जरूरी सुविधाएं हैं और न साफ माहौल। ज्यादातर केंद्रों में एक ही कमरा है। इसमें पढ़ाई, एक्टिविटी, टेक होम राशन का स्टॉक रखने के अलावा छोटा ऑफिस होता है। कई बार महीनों किराया नहीं आता तो केंद्रों पर ताला भी लग जाता है। गर्भवती महिलाओं, बच्चों के टीकाकरण, बच्चों को खाना, नाश्ता दिए जाने के साथ ही पोषण-स्वास्थ्य की ट्रैकिंग की जिम्मेदारी भी इन केंद्रों की होती है। गर्भवती महिलाओं के रजिस्ट्रेशन से लेकर प्रसव के बाद स्वास्थ्य सुविधाएं, मातृ वंदना, लाड़ली बहना जैसी योजनाओं का लाभ इन केंद्रों के माध्यम से मिलता है। रायसेन रोड स्थित अर्जुन नगर में दो आंगनवाड़ियां स्लम बस्ती में हैं। केंद्र नंबर 526 का भवन लगभग 15×20 वर्गफीट के सिर्फ एक कमरे में है। इसी क्षेत्र में केंद्र नंबर 527 में लगभग 15×12 वर्गफीट का एक ही कमरा है। दोनों में स्टोर रूम-टॉयलेट नहीं है। सामने खुली नालियां और गंदगी फैली नजर आती है। कार्यकर्ताओं का कहना है कि क्षेत्र में 3000 रुपए में बड़ा भवन मिलना मुश्किल है। सुभाषनगर स्थित सुदामा नगर में आंगनवाड़ी केंद्र 523 तंग गली में स्थित है। यह गंदगी से घिरे क्षेत्र में 90 वर्गफीट के एक कमरे में है। कई महीने किराया नहीं आने पर हाल ही में भवन मालिक ने ताला लगा दिया था।

मिशन कर्मयोगी अंतर्गत कुटीर एवं ग्रामोद्योग विभाग की क्षमता इकाई का गठन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्य शासन द्वारा मिशन कर्मयोगी अंतर्गत कुटीर एवं ग्रामोद्योग विभाग की क्षमता इकाई का गठन किया गया है। प्रमुख सचिव कुटीर एवं ग्रामो?द्योग श्री अमित कुमार राठौर को अध्यक्ष एवं आयुक्त हाथकरघा एवं हस्तशिल्प तथा प्रबंध संचालक संत रविदास म.प्र. हस्तशिल्प एवं हाथकरघा विकास निगम श्री मदन कुमार नागरगोजे को सदस्य सचिव बनाया गया है। श्री मालसिंह भयडिया प्रबंध संचालक म.प्र. खादी तथा ग्रामो?द्योग बोर्ड तथा मुख्य कार्यपालन अधिकारी म.प्र. माटीकला बोर्ड, श्री मोहित बुंदस आयुक्त रेशम संचालनालय, श्री अरुण कुमार सिंह उप सचिव कुटीर एवं ग्रामोद्योग, श्री जी.एस. आर्य अवर सचिव कुटीर एवं ग्रामो?द्योग को सदस्य बनाया गया है।

मिशन कर्मयोगी, एक सरकारी पहल है, जिसका उद्देश्य सिविल सेवकों को राष्ट्र की सेवा के लिए बेहतर तैयार करना है। यह सिविल सेवा में सुधार के लिए एक व्यापक योजना है। मिशन कर्मयोगी का उद्देश्य पारदर्शिता और प्रौद्योगिकी के माध्यम से सिविल सेवकों को एक आदर्श कर्मयोगी के रूप में विकसित करना है।

जल गंगा संवर्धन अभियान बने जन आंदोलन : मंत्री सिलावट

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट ने कहा है कि जल गंगा संवर्धन अभियान देश में जन-आंदोलन के रूप में ख्याति प्राप्त कर रहा है। समाज की भागीदारी से सरकार की जल संरक्षण और संवर्धन के कार्यों के फलस्वरुप मध्यप्रदेश जल शक्ति के रूप में उभर कर देश के नक्शे में स्थापित होगा।

मंत्री श्री सिलावट ने शनिवार को विदिशा ज़िलें में जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत ग्राम जम्बार के तालाब में आयोजित श्रमदान कार्यक्रम में सहभागिता की। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती गीता कैलाश रघुवंशी, विधायक श्री मुकेश टंडन, श्री हरि सिंह सप्रे, श्री हरि सिंह रघुवंशी, जनपद अध्यक्ष श्री वीर सिंह के साथ अन्य जन-प्रतिनिधियों ने भी श्रमदान में सहभागिता की।

मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने संपूर्ण मध्यप्रदेश में लागू कर जल संवर्धन के ऐसे कार्य को मूर्तरूप दिया जा रहा है, जिससे आने वाली पीढ़ी को हम प्रचुर मात्रा में जल संचय भण्डार विरासत में दे सकेंगे। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार इंदौर में प्रदेश के अनेक क्षेत्रों में लीड कर राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति हासिल की है, ठीक वैसी ख्याति विदिशा जिला जल गंगा संवर्धन अभियान के कार्यों में अर्जित करे। इस अभियान को अपना समझकर हम अपने स्तर पर सहयोग व योगदान कर मिसाल कायम करें। मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि जल का कोई विकल्प नहीं है, जल है तो कल है, भविष्य है और प्रगति संभव है। उन्होंने बताया कि मध्यप्रदेश में सिंचित रकबा बढ़ाने के लिए सिंचाई कार्य सर्वोच्च प्राथमिकता से मुख्यमंत्री डॉ. यादव के मार्गदर्शन में पूरे कराए जा रहे हैं। उन्होंने विगत वर्षों की तुलना में सिंचित रकबे में हुई आशातीत वृद्धि को रेखांकित करते हुए कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का नदियों को जोड़ने का संकल्प प्रदेश में केन्द्र और राज्य सरकार मिलकर पूरा कर रहे हैं।

उन्होंने केन-बेतवा लिंक परियोजना से होने वाले प्रमुख फायदों के बारे में बताते हुए कहा कि इससे बिजली उत्पादन के साथ 12 माह पेयजल की उपलब्धता रहेगी। मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि पहले गांवों के तालाब व अन्य जल संचय लबालब भरे रहते थे। इस स्थिति को पुनः लाने में हम कोई कोर कसर ना छोड़े। उन्होंने कहा कि हरेक जल स्त्रोत की संरचना अतिक्रमण से विमुक्त हो यदि कहीं कोई इस प्रकार की खबर मिलती है तो अभियान के रूप में क्रियान्वित कराने की समझाइश अधिकारियों की दी है। मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि जल का सदुपयोग हो इसके लिए विशेष ध्यान देना होगा।

उन्होंने बताया कि खुली नहरों की जगह माइक्रो परियोजना से पाईप लाईन का विस्तारीकरण किया जा रहा है। उन्होंने प्राचीन तालाब, कुएं, बावड़ियों के अलावा अन्य जल स्त्रोतों के जीणोद्धार पर बल देते हुए कहा कि इन विरासतों को बनाए रखना जरूरी है।विदिशा विधायक श्री मुकेश टंडन ने कहा कि बेतवा नदी में नाले ना मिलें इसके लिए पृथक से तैयार की गई कार्य योजना अनुसार कार्य किया जा रहा है।

पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री पटेल और राज्य मंत्री सिंह जल गंगा संवर्धन अभियान और

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास तथा श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने जल गंगा संवर्धन अभियान और पंच-सरपंच सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में चलाए जा रहे जल गंगा संवर्धन अभियान में पंचायतों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि हमारा प्रदेश नदियों की जन्मस्थली है और इनका संरक्षण हमारे साथ आने वाली पीढ़ियों की भी जिम्मेदारी है। उन्होंने आह्वान किया कि छोटी नदियों और उनके जल स्त्रोतों को बचाने पर ध्यान दें। नदियों के उद्गम स्थलों को संरक्षित करें, तटों पर पौधे लगाएं और

वृक्ष बनने तक उनकी देखरेख करें। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि राज्य सरकार पंचायतों को आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित है। सभी ग्राम पंचायतों को अपने विकास की योजना स्वयं बनानी चाहिए। इसके लिए सरकार उनके साथ खड़ी है और विकास हेतु आवश्यक वित्तीय सहायता उपलब्ध करा रही है। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि पंचायतों को अब सशक्त और अधिकार-संपन्न बनाया जा रहा है। सरपंचों को 25 लाख रुपये तक के वित्तीय अधिकार दिए गए हैं। साथ ही अधोसंरचना विकास के लिए भी पर्याप्त राशि प्रदान की जा रही है। क्लस्टर स्तरीय पंचायतों में 45.50 लाख रुपये और अन्य पंचायतों में 37.50 लाख रुपये की लागत से पंचायत भवनों का निर्माण कराया जा रहा है। सभी ग्राम पंचायतों में चरणबद्ध तरीके से सामुदायिक भवन बनाए जाएंगे। उन्होंने यह भी कहा कि पंचायत प्रतिनिधियों को न केवल अपने अधिकारों के प्रति सजग रहना होगा, बल्कि अपने कर्तव्यों का भी गंभीरता से निर्वहन करना होगा। जनहितैषी योजनाओं का लाभ आम नागरिकों तक सहजता से पहुँचाना उनकी जिम्मेदारी है। पंचायतों के विकास में जनप्रतिनिधियों की भागीदारी अनिवार्य है।

अंधेरे में बिजली की शिकायत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। शहर के कई लोग बिजली से जुड़ी शिकायत दर्ज करने के लिए कॉल सेंटर के नंबर 1912 पर आसानी से कंप्लेंट नहीं कर पाते। प्री-मानसून और मानसून सीजन में यह परेशानी और बढ़ जाती है। इसकी वजह यह है कि मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के दायरे के 16 जिलों के 41 लाख उपभोक्ताओं (कृषि उपभोक्ता छोड़कर) की शिकायत दर्ज करने के लिए यही एक नंबर है।

इस नंबर पर एक साथ सिर्फ 800 लोगों के कॉल ही अटेंड किए जा सकते हैं। 801वें नंबर या उसके बाद के लोगों के कॉल ड्रॉप हो जाते हैं, जिससे उनकी शिकायत दर्ज नहीं हो पाती। बिजली कंपनी के अधिकारियों ने बताया कि नंबर 1912 प्रदेश की तीनों विद्युत वितरण कंपनियों के लिए है। जितने जिले जिस कंपनी के दायरे में आते हैं, उन्हीं जिलों के नंबर अपने-अपने कंपनी क्षेत्र के कॉल सेंटर में दर्ज होते हैं। 4 मई से आंधी, बादल, बारिश, प्री-मानसून गतिविधि शुरू हो गई थी। आंधी और बारिश के कारण बिजली लाइनों पर पेड़ों की डगाल गिरने, होर्डिंग्स, फ्लेक्स उड़ने से फॉल्ट होते हैं, जिससे कई कॉलोनियों और मोहल्लों में बिजली गुल हो जाती है। 4 से 16 मई तक 13 दिनों में 9 हजार से ज्यादा शिकायतें दर्ज हुईं।

बिजली कंपनी के मोबाइल ऐप 'उपाय' पर 1000 से ज्यादा शिकायतें दर्ज की गईं। इस तरह 13 दिनों में लगभग 10 हजार शिकायतें दर्ज की गईं। मतलब है कि एक दिन में औसतन 759 शिकायतें दर्ज हुईं। मानसून में बिजली लाइन, ट्रांसफार्मर या सब स्टेशन में तकनीकी कारणों से बिजली सप्लाई बाधित हो जाती है। इस दौरान शिकायतों की संख्या बढ़कर 1500 या उससे ज्यादा हो जाती है। यदि किसी उपभोक्ता का कॉल सेंटर के नंबर 1912 पर कॉल नहीं लग पा रहा है, तो वे इसके लिए अन्य तीन माध्यम- मोबाइल ऐप 'उपाय', चैट बोट के नंबर 07552551222 और बिजली कंपनी के पोर्टल पर कंप्लेंट के ऑप्शन में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं।

पीडब्ल्यूडी की लापरवाही से कचरे का ढेर और कब्जे

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। साल 1929 में तीन दिन की यात्रा के दौरान महात्मा गांधी ने भोपाल के जिस बेनजीर ग्राउंड पर आमसभा को संबोधित किया था वह अब नशा और जुआ के साथ तमाम अवैध गतिविधियों का केंद्र बन गया है। यह ग्राउंड शाहजहांनाबाद इलाके के लोगों के लिए एक अच्छा खेल मैदान था।

ग्राउंड के पास के पीडब्ल्यूडी ऑफिस से लेकर खाली पड़े सरकारी मकानों पर अवैध कब्जे हैं। स्थानीय रहवासी बताते हैं कि मकानों के भीतर शराब, गांजा, चरस से लेकर ड्रग्स का नशा करते हुए भी लोगों को देखा जा सकता है।

हमीदिया अस्पताल के निर्माण के दौरान यहां लेबर के ठहरने के लिए अस्थायी मकान बना दिए गए। इसके बाद ग्राउंड के बुरे दिन शुरू हो गए। यह गंदगी का अड्डा बन गया। कोरोना काल में भी यहां मजदूर जमे हुए थे। किसी समय में यहां हॉकी, फुटबॉल और क्रिकेट के टूर्नामेंट होते थे। पुराने शहर के युवा यहां नियमित खेलते थे। मैदान के पास में बने सरकारी मकान जिनमें डॉक्टर निवास करते थे, वे खाली हो गए। खाली मकान और पीडब्ल्यूडी के ऑफिस पर कुछ लोगों ने कब्जे कर लिए। ग्राउंड और मकान का रखरखाव पीडब्ल्यूडी के हवाले है।

श्रमोदय आदर्श आईटीआई में प्रवेश के लिए पंजीयन 31 तक

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)।

सहायक श्रमायुक्त रीवा संभाग ने बताया कि श्रमोदय आदर्श आईटीआई भोपाल में 8 ट्रेडों में प्रवेश प्रक्रि या प्रारंभ हो चुकी हैं। प्रवेश की प्रक्रि या कौशल विकास विभाग के डीएसडी पोर्टल पर होगी। नए सत्र के लिए आवेदक ूएकेकण्उचण्हवअण्पद पोर्टल पर 31 मई तक पंजीयन कर सकते हैं।

संस्था में तकनीशियन मेकाट्रानिक्स, इलेक्ट्रीशियन, सीएनसी मशीनिंग तकनीशियन, इंटीरियर डिजाईन एण्ड डेकोरेशन, आईओटी स्मार्ट सिटी, वेल्डर ट्रेड का एक वर्षीय पाठयक्र म संचालित है। इन व्यवसायों में वेल्डर के लिए प्रवेश योग्यता आठवीं तथा शेष सभी सात पाठयक्र मों में प्रवेश के लिए दसवीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए।

मध्यप्रदेश भवन एवं अन्य संनिर्माण कर्मकार कल्याण मंडल के पंजीकृत श्रमिक एवं उनके आश्रित परिवार के सदस्य श्रमोदय आदर्श आईटीआई में एक वर्षीय एवं दो वर्षीय व्यवसाय में निःशुल्क प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं।

"वूमन फॉर ट्री" अभियान में प्रदेश की सशक्त भागीदारी

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)।

प्रदेश में केन्द्र सरकार के "एक पेड़ माँ के नाम" से प्रेरित होकर अमृत मित्र योजना के अंतर्गत "वूमन फॉर ट्री" पौध-रोपण अभियान का संचालन किया जा रहा है। यह अभियान मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देशन में रि यान्वित किया जा रहा है। यह कार्यक्र म अमृत 2.0 योजना एवं डे-एनयूएलएम के कन्वर्जेंस से संचालित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य नगरीय क्षेत्रों में हरित क्षेत्र का विस्तार, पर्यावरण संतुलन बनाये रखने, नागरिकों को स्वस्थ जीवन-शैली एवं महिला स्व-सहायता समूहों को आर्थिक आत्मनिर्भरता प्रदान करना है।

वूमन फॉर ट्री अभियान के संचालन के लिये केन्द्र सरकार ने पोर्टल तैयार किया है। सभी प्रदेशों से उन स्थानों का चयन करने के लिये कहा गया था, जिन स्थलों पर पौध-रोपण किया जायेगा। मध्यप्रदेश राष्ट्रीय स्तर पर दूसरे स्थान पर है, जहाँ 565 विजिट कर स्थल की पहचान की गयी है।

यह कार्यक्र म प्रदेश के सभी नगरीय निकायों में विश्व पर्यावरण दिवस पर शुरू किया जायेगा। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून से 31 अगस्त 2025 तक प्रदेश में व्यापक स्तर पर पौध-रोपण अभियान संचालित किया जाएगा। यह पौधे जल संरचनाओं के आसपास, कैचमेंट एरिया, पार्क, शासकीय संस्थानों, विद्यालयों, जल शोधन संयंत्रों तथा उपलब्ध शासकीय भूमि का चयन कर किया जायेगा। लगाये गये पौधों का संरक्षण एवं नियमित निगरानी महिला स्व-सहायता समूहों (अमृत मित्रों) के माध्यम से की जायेगी।

नगरीय प्रशासन एवं विकास आयुक्त श्री संकेत भोंडवे ने बताया कि प्रदेश में "वूमन फॉर ट्री" अभियान तीन चरण में पूरा किया जाएगा। प्रथम चरण में स्थल चयन के लिये भ्रमण कार्यक्र म 21 मई से 23 मई, दूसरा चरण पौध-रोपण कार्यक्र म 5 जून से 31 अगस्त तक और तीसरा चरण पौधों का संरक्षण एवं निगरानी कार्य 1 से 2 वर्षों तक किया जायेगा। यह अभियान नारी सशक्तिकरण एवं हरित भारत के निर्माण की दिशा में एक अनूठा प्रयास है। इस अभियान को सामाजिक सहभागिता और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के साथ पूरा किया जायेगा। देशभर में यह अभियान केन्द्रीय आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय की मदद से संचालित किया जायेगा।

आचार्य विद्यासागर योजना से डेयरी व्यवसाय का मौका

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। पशुपालन विभाग द्वारा दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए आचार्य विद्यासागर गौ संवर्धन योजना लागू की गई है। इस योजना में 75 प्रतिशत राशि बैंक ऋण के माध्यम से दी जाती है। शेष 25 प्रतिशत राशि हितग्राही को अंशदान के रूप में देनी होती है। योजना में 7 वर्षों तक 5 प्रतिशत ब्याज की प्रतिपूर्ति अनुदान का भी लाभ दिया जाता है।

योजना के लिए पशुपालक के पास कम से कम 5 पशु और एक एकड़ कृषि भूमि होना आवश्यक है। पशुओं की संख्या में वृद्धि होने पर उसी के अनुपात में कृषि भूमि का निर्धारण किया जाता है। योजना की एक इकाई में 5 भैंस होने पर 4 लाख 25 हजार रुपए तथा 5 शंकर नस्ल की गाय होने पर 3 लाख 82 हजार रुपए एवं देशी गाय होने पर 2 लाख 43 हजार 750 रुपए इकाई लागत निर्धारित की गई है। 10 दुधारू पशुओं के होने पर 10 भैंसों में 8 लाख 40 हजार, शंकर गाय के लिए 7 लाख 51 हजार रुपए तथा 10 देशी गाय के लिए 4 लाख 75 हजार रुपए इकाई लागत निर्धारित की गई है।

इस योजना में सामान्य वर्ग के पशुपालक को परियोजना लागत का 25 प्रतिशत अधिकतम एक लाख 25 हजार रुपए मार्जिन मनी सहायता के रूप में दिया जाता है। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के हितग्राही को परियोजना लागत का 33 प्रतिशत अधिकतम 2 लाख रुपए मार्जिन मनी के रूप में दिया जाता है। पशुपालन विभाग के माध्यम से प्रकरण बैंकों में भेजे जाते हैं। बैंक से प्रकरण स्वीकृत होने के बाद हितग्राही को इकाई लागत की राशि प्रदान की जाती है। इस योजना में इकाई लागत की 75 प्रतिशत राशि पर बैंक की कुल ऋण राशि में 5 प्रतिशत वार्षिक ब्याज अनुदान दिया जाता है। इसकी राशि अधिकतम 25 हजार रुपए प्रतिवर्ष निर्धारित है।

नि:शुल्क राशन के लिए ई-केवाईसी कराने अंतिम मौका

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिला आपूर्ति अधिकारी ने जानकारी देकर बताया है कि सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत वितरित होने वाले निःशुल्क राशन प्राप्त करने वाले सभी पात्र हितग्राहियों को ई-केवाईसी कराने शासन द्वारा 31 मई 2025 तक अंतिम अवसर दिया गया है। इधर अधिकारियों को भी विभिन्न जिम्मेदारी सौंपी गई है।

कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी द्वारा जारी आदेशानुसार ई-केवाईसी के लिए चलाए जा रहे अभियान को 31 मई तक प्रभावी रूप से चलाने अपर कलेक्टर को जिला स्तरीय नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। अनुविभाग स्तर पर सभी अनुविभागीय अधिकारी नोडल अधिकारी रहेंगे तथा सहकारी समिति की दुकानें खुलवाने उपायुक्त सहकारिता को जिम्मेदारी सौंपी गई है। इसी प्रकार स्वसहायता समूह द्वारा संचालित उचित मूल्य दुकानों से कार्य कराने जिला समन्वयक आजीविका मिशन को निर्देशित किया गया है। सभी जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों को पंचायत सचिव, रोजगार सहायक तथा मुख्य नगर पालिका अधिकारियों को वार्ड प्रभारी को कार्य कराने ड्यूटी लगाई गई है। इसी के साथ ई-केवाईसी को पूर्ण कराने अनुविभागीय अधिकारी (समस्त), सहकारिता विस्तार अधिकारी, कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी, जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के पर्यवेक्षक को भ्रमण कर कार्य कराने जिम्मेदारी दी गई है। उन्होंने बताया कि जिले में 1041065 हितग्राहियों में से 80.78 प्रतिशत के ई-केवाईसी हो चुकी है। 200072 हितग्राही के ई-केवाईसी शेष रह गये हैं। इनमें बच्चों वृद्धों के ई-केवाईसी मेरा ई-केवाईसी एप के माध्यम से किया जा रहा है। शेष हितग्राहियों को पीओएस मशीन से ई-केवाईसी कराना है। इसलिए ग्रामवार, वार्डवार, मोहल्लों में कैंप लगाए जा रहे हैं तथा घर-घर जाकर गठित दल ई-केवाईसी कर रहे हैं, जो हितग्राही मृत हो चुके हैं अथवा जिनकी शादी हो चुकी है अथवा जो पलायन कर गये हैं उनकी सूची विक्रे ता तैयार करके पंचायत सचिव के द्वारा डिलीट करवाना है। सभी हितग्राहियों को अपना राशन प्राप्त करने 31 मई तक ई-केवाईसी कराना जरूरी, अन्यथा राशन बंद होने की संभावना है।

युवा संगम-रोजगार, स्वरोजगार एवं अप्रेंटिसशिप मेला 20 मई को

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिला रोजगार अधिकारी जिला रोजगार कार्यालय ने जानकारी देकर बताया कि जिले के बेरोजगार युवक एवं युवतियों को एक ही छत के नीचे रोजगार एवं स्वरोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जिला प्रशासन के मार्गदर्शन में जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र, आई.टी.आई. एवं जिला रोजगार कार्यालय सीधी द्वारा दिनांक 20 मई 2025 को जिला रोजगार कार्यालय सीधी के परिसर में समय 11 बजे से 03 बजे तक एक दिवसीय ''युवा संगम'' संयुक्त रूप से रोजगार, स्व-रोजगार एव अप्रेन्टिसशिप मेले का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें देश/प्रदेश एवं स्थानीय स्तर से निजी क्षेत्र की कंपनियॉ भाग ले रही हैं।

कृषकों को ग्रीष्मकालीन फसलों हेतु मई माह के लिए कृषि परामर्श

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास मनोज कश्यप ने बताया कि सतना एवं मैहर जिले में ग्रीष्मकालीन फसलों के लिए कृषि परामर्श हेतु मई माह के लिए कृषि परामर्श जारी किया गया है।

विभाग द्वारा कृषकों को दी गई सलाह में गन्ना की फसल में ग्रीष्मकालीन अवस्था में तापमान के अनुसार फसल को आवश्यकता होने पर सिंचाई करें। गन्ने की फसल में निंदाई-गुडाई करें। जिससे खरपतवार नियंत्रण एवं नमी संरक्षण हो सके। इसी प्रकार मूंग व उडद की फसल में ग्रीष्मकालीन मूंग व उडद फसल में उचित समय पर सिंचाई करें। जिससे नमी बनी तथा बढते तापक्र म का फसल पर कम से कम प्रभाव पडे। फसल पर रसचूसक कीट का प्रयोग दिखाई देने पर डायमिथोएट 30 ईसी, 2 मिली/लीटर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस एल 0.2 मि.ली./लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करें। फसल पर एन.पी.के (19:19:19) जल विलेय उर्वरक को फूल आने से पहले और फली बनने की अवस्था पर 5 ग्राम/लीटर पानी में घोला बनाकर छिडकाव करना चाहिए। जिससे उपज में वृद्धि हो सके। कपास की फसल में जहां सिंचाई की सुविधा हो, कपास की बुआई 15-25 मई के मध्य कर ले।

किसानों का सामान्य सलाह फसल गहाई के उपरांत उत्पाद को उचित नमी तक धूप में सुखायें। तत्पश्चात भण्डार गृह को साफकरके उसमें भण्डारित करें। फसल कटाई उपरांत खेत में उचित नमी हो तो जुताई करें। गेहूं की कटाई के उपरांत नरवाई न जलायें। पूर्व में बोई गई फसलों के अवशेषों को खेत से बाहर करें जिससे कि बीमारी एवं रोगों की रोकथाम हो सके। खरीफ में जिन फसलों को बुवाई करनी हो उनकी उन्नतशील किस्मों के प्रमाणित बीज की व्यवस्था जरूर कर लेवें। किसान भाई मिट्टी परीक्षण हेतु नमूना एकत्रित कर कृषि विभाग के अधिकारियों से सम्पर्क करें।

सिंचाई के लिए ड्रिप, स्प्रिंकलर इत्यादि सिंचाई उपकरणों का उपयोग उपलब्धता के आधार पर करें। जिससे सिंचाई के जल का समुचित उपयोग हो सके। भूमि जनित रोगों के नियंत्रण हेतु खेत की जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें। किसानों का सामान्य सलाह में फसलों के कीट व्याधियों की पहचान तथा उनके रोकथाम की जानकारी हेतु मोबाईल एप्लीकेशन National Pest Surveillance System (NPSS) httpsþ@@play.google.com @store@apps@details\idco m.npss अपने मोबाईल में डाउनलोड कर उपयोग करें।

आरटीई अंतर्गत अशासकीय शालाओं में प्रवेश प्रारंभ

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिला परियोजना समन्वयक जिला शिक्षा केन्द्र ने जानकारी देकर बताया कि निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 की धारा 12(1) (ग) के प्रभावी रि यान्वयन तथा कमजोर वर्ग एवं वंचित समूह के बच्चों के निःशुल्क प्रवेश प्रक्रि या सत्र 2025-26 की कार्यवाही दिनांक 07.05.2025 से प्रारंभ है। प्रवेश हेतु पात्र इच्छुक आवेदक अपने ग्राम/वार्ड, पड़ोस तथा विस्तारित पड़ोस के गैर अनुदान मान्यता प्राप्त प्राइवेट स्कूलों में पोर्टल पर कक्षावार प्रदर्शित स्कूलों में निःशुल्क प्रवेश हेतु अपने समग्र आई.डी. एवं आधार सत्यापन करके आनलाइन दिनांक 21.05.2025 तक दर्ज कर सकेंगे।

आवेदन के पश्चात दिनांक 23.05. 2025 तक निर्धारित सत्यापन केन्द्र (जिले के समस्त जन शिक्षा केन्द्रों) पर मूल दस्तावेजों से सत्यापन कराया जाना अनिवार्य है। सत्यापन उपरांत पात्र पाये गये आवेदकों को आनलाइन लॉटरी के माध्यम से अशासकीय स्कूल का आवंटन किया जायेगा। आवेदकों द्वारा निःशुल्क प्रवेश हेतु अपना आवेदन पत्र आर.टी.ई. पोर्टल तजमचवतजंस.उच.हवअ.पद पर दर्ज किया जा सकेगा। एक आवेदक केवल एक ही आनलाइन आवेदन करने हेतु पात्र होगा। आनलाइन आवेदन में कम से तीन स्कूलों को विकल्प के रूप में दर्ज करना होगा एवं अधिकतम 10 स्कूलों का चयन किया जा सकता है। स्कूलों का चयन करते समय आवेदक अपने प्राथमिकता को भलीभाँति सुनिश्चित करने के उपरांत ही अपना आवेदन पोर्टल पर लॉक करें। आवेदन फार्म के साथ आरक्षित कोटा से संबंधित दस्तावेज स्केन पोर्टल पर अपलोड किया जाना अनिवार्य है। आनलाइन आवेदन पश्चात दस्तावेजों के परीक्षण के समय मूल दस्तावेज उपलब्ध कराना होगा। दर्ज जानकारी तथा मूल दस्तावेज में अंतर पाए जाने पर अपात्र किया जायेगा।

मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना अंतर्गत पात्र हितग्राहियों के आवेदन आमंत्रित

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। महाप्रबंधक जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र ने जानकारी देकर बताया है कि म.प्र. शासन सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग द्वारा संचालित मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु जिले के लिए शासन द्वारा भौतिक लक्ष्य आवंटित किया गया है। मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजनांतर्गत स्वरोजगार स्थापित कर स्वयं का व्यवसाय/सेवा/उद्योग स्थापित करने वाले पात्र इच्छुक आवेदकों से एमपी ऑनलाइन के समस्त पोर्टल के माध्यम से ऋण आवेदन आमंत्रित किए गए हैं।

मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजनांतर्गत पात्रता

आठवीं कक्षा उत्तीर्ण, उम्र 18 से 45 वर्ष के मध्य, मध्यप्रदेश का मूल निवासी व्यक्ति जो 50 हजार से 25 लाख तक के व्यवसाय/सर्विस क्षेत्र की गतिविधि तथा 50 हजार से 50 लाख तक उद्योग/विनिर्माण क्षेत्र की इकाई स्थापित करना चाहते हैं, उन्हे योजनांतर्गत 3 प्रतिशत (महिला उद्यमियों को महिला वित विकास निगम द्वारा अतिरिक्त 2 प्रतिशत) ब्याज अनुदान तथा नियमानुसार सीजीटीएमएसई गारंटी शुल्क प्रतिपूर्ति शासन द्वारा आवेदक को मोरेटोरियम अवधि सहित अधिकतम 7 वर्ष तक देय होगी।

अस्पताल की अव्यवस्थाओं को लेकर जनप्रतिनिधि ने सौंपा अपर कलेक्टर को पत्र

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। नागौद अस्पताल में चल रही अव्यवस्थाओं को लेकर जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि वरुण गूजर डिंकल ने अपर कलेक्टर सतना से की औपचारिक मुलाकात के दौरान नागौद सिविल अस्पताल में चल रही अव्यवस्थाओं को लेकर सौंपा पत्र,एवं जल्द निम्न बिन्दुओं में कार्यवाही की मांग ,ताकि नागौद की जनता को मिल सके बेहतर इलाज ।

मुख्यमंत्री वीडियो कान्फ्रेंसिंग से आज करेंगे समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 19 मई को वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से जल गंगा संवर्धन अभियान की समीक्षा करेंगे। बैठक दोपहर 2 बजे आरंभ होगी। बैठक में कमिश्नर कार्यालय से कमिश्नर बीएस जामोद तथा कलेक्टर कार्यालय के वीडियो कान्फ्रेंसिंग केन्द्र से कलेक्टर प्रतिभा पाल, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं जल गंगा संवर्धन अभियान से जुड़े विभागों के अधिकारी शामिल होंगे ।

मुख्यमंत्री वीडियो कान्फ्रेंसिंग से आज करेंगे समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 19 मई को वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से जल गंगा संवर्धन अभियान की समीक्षा करेंगे। बैठक दोपहर 2 बजे आरंभ होगी। बैठक में कमिश्नर कार्यालय से कमिश्नर बीएस जामोद तथा कलेक्टर कार्यालय के वीडियो कान्फ्रेंसिंग केन्द्र से कलेक्टर जल गंगा संवर्धन अभियान से जुड़े विभागों के अधिकारी शामिल होंगे।

20 रक्तवीर "रक्त योद्धा सम्मान" से सम्मानित

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। एमराल्ड ग्रीन सोसाइटी मे विगत दिवस सिन्धु विकास समिति एवं जायंट्स ग्रुप ऑफ स्मार्ट सिटी के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया, जिसमे मातृशक्ति सहित 20 रक्तवीरो ने रक्तदान किया। समिति परिवार ने 18 मई रविवार सोसाइटी परिसर में डॉ. एस के श्रीवास्तव, डॉ. नवीन कालरा, डॉ. सारिका कालरा डॉ. मनीषा सोई, डॉ. रेखा पांडे,वरिष्ठ समाजसेवी मनोहर लाल भोजवानी,संरक्षक मनोहर डिगवानी अध्यक्ष विनोद गेलानी, महामंत्री घनश्याम मंघरानी अजय सुखरामनी जेठानंद वाधवानी,की गरिमामय उपस्तिथि में रक्तवीरो को "रक्त योद्धा सम्मान" एवं सोसाइटी अध्यक्ष श्री अजय सुखरामनी जी को शाल श्री फल एवं स्मृति प्रतीक भेंट सम्मानित किया। इस अवसर पर निरंतर रक्तदान कर रहे समाजसेवी जेठानंद वाधवानी जी को स्मृति चिन्ह एवं सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया। समीर सुखरामानी,शेफाली सुखरामनी,सीमा दुदानी रविंद्र दुदानी डॉ. दीपक सोई,मनीष सदानी,शंकर धनवानी,राहुल आरतनी,शनि कुमार सूर्यवंशी, आकाश बनर्जी,मनोहर डिगवानी, भरत गेलानी,दीक्षा गेलानी, मोहित कापड़ी,जैकी छाबड़िया जी। उल्लेखनीय है सिन्धु विकास समिति के अध्यक्ष विनोद गेलानी निरंतर युवाओं एवं मातृशक्ति के साथ साथ 63 वर्ष के युवाओं को भी रक्तदान के लिए प्रेरित करते हैं आज उसी का परिणाम है कि अनेक युवा एवं मातृशक्ति कई शुभ कार्य रक्तदान कर मनाते हैं। कार्यक्रम का सफल संचालन मनोहर आरतनी जी ने किया एवं आभार महामंत्री घनश्याम मँघरानी ने व्यक्त किया। सम्मान के अवसर पर श्री गुरुप्रसाद तिवारी,श्री मुकुल जैन, लक्ष्मण थदानी,संरक्षक मनोहर डिगवानी संस्थाध्यक्ष विनोद गेलानी मनोहर भोजवानी मनोहर आरतनी घनश्याम मंघरानी संजय वाधवानी दीपक वाधवानी रूपचंद छुट्टानी मनीष

सेमरिया में भाजपा ने निकली 'तिरंगा शौर्य सम्मान' यात्रा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। भारतीय जनता पार्टी के निर्देश पर पूरे प्रदेश में चल रहे राष्ट्रप्रेरक अभियानों की श्रृंखला में सेमरिया विधानसभा क्षेत्र में 'तिरंगा शौर्य सम्मान यात्रा' का भव्य और अनुशासित आयोजन किया गया। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए कायराना आतंकी हमले और उसके बाद भारत सरकार द्वारा चलाए गए जवाबी अभियान 'ऑपरेशन सिंदूर' की पृष्ठभूमि में यह यात्रा राष्ट्र के वीरों को श्रद्धांजलि और आतंकवाद के प्रति जनएकजुटता का प्रतीक बनी।

यात्रा में बड़ी संख्या में क्षेत्रीय नागरिकों की सहभागिता रही, जिन्होंने हाथों में तिरंगा लेकर आतंकवाद के खिलाफ देश की एकता का संदेश दिया। पूरे मार्ग पर शांति, अनुशासन और राष्ट्रगौरव का वातावरण छाया रहा। यह केवल एक यात्रा नहीं थी, बल्कि सेमरिया की जनता द्वारा भारत की सुरक्षा नीति, सैन्य कार्रवाई और राष्ट्रीय संप्रभुता के प्रति समर्थन का सार्वजनिक उद्घोष था।

यात्रा का आयोजन पूर्णतः भारतीय जनता पार्टी के संगठनात्मक मार्गदर्शन में हुआ, जिसमें पार्टी के विभिन्न कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों की सक्रिय सहभागिता रही। इस अवसर पर पूर्व विधायक की गरिमामयी उपस्थिति विशेष रूप से उल्लेखनीय रही, जिनकी सक्रिय सहभागिता ने यह सुनिश्चित किया कि सेमरिया का प्रत्येक नागरिक इस राष्ट्रीय भावनात्मक अभियान में अपनी भूमिका निभा सके।

कार्यक्रम में भाजपा जनपद अध्यक्ष श्री राजेश यादव, वरिष्ठ कार्यकर्ता राजेन्द्र विश्वकर्मा, दयानन्द तिवारी, मंडल अध्यक्ष शेषमणि पांडेय, दीपक सिंह, अरूणेन्द्र तिवारी, मनीष शुक्ला, देवेन्द्र त्रिपाठी, अनिल पांडेय, युवराज त्रिपाठी, नंदू अग्निहोत्री, ज्ञानेन्द्र सिंह चंदे, सनत सेन सहित बड़ी संख्या में सेमरिया विधानसभा के कार्यकर्ता उपस्थित रहे, जिनकी उपस्थिति ने आयोजन को और भी प्रभावशाली और संगठित स्वरूप प्रदान किया।

इस आयोजन ने न केवल पहलगाम हमले के शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की, बल्कि यह भी सिद्ध कर दिया कि सेमरिया राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को भली-भांति समझता है। तिरंगे के सम्मान में निकली यह यात्रा राजनीतिक गतिविधि नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक थी। यह संदेश अब स्पष्ट है, भारत का कोई भी कोना आतंकवाद के सामने झुकेगा नहीं – और जब-जब राष्ट्र पुकारेगा, तब-तब सेमरिया उसका स्वर बनेगा।

संपादकीय

बयानबाजी से बाज आयें बड़बोले नेता

भारतीय राजनीति के गलियारों मे चिंता व चिन्तन होने लगा है कि राजनीतिक दल अपने नेताओं को केवल चुनाव जिताने वाली मशीनें न समझें, बल्कि उन्हें संवैधानिक जिम्मेदारी,नेता अपनी भाषा की मर्यादा और सामाजिक समरता व संतुलन का पाठ पढ़ाएं

चुनाव आयोग को भी ऐसे बयानों पर स्वत: संज्ञान लेते हुए कठोर निर्देश और दंड का प्रावधान करना चाहिए ताकि यह संदेश स्पष्ट हो जाए कि कोई भी व्यक्ति संविधान से ऊपर नहीं है।ऐसे बयान बाज बड़बोले नेता से बिगड़ बोल से जनता भारी आक्रोश व्याप्त है

सम्पूर्ण विश्व का ध्यान इन दिनों भारत पर टिकी हुई है। विशेषकर अन्तराष्ट्रीय राजनीति विशेलषज्ञों का,विगत दिनों पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत पाक युद्ध से जो स्थिति उत्पन्न हुई थी।जिसमें हमारी पराक्रमी सेनाओं नें आतंकी के आकाओं पाकिस्तान के सरजमीं में घुस कर उनके ठिकानों जमींदोष कर दिया है।जिसके बाद हमारे सेनाओं व देश - विदेशों में की जय जयकार हो रही थी,तभी मध्य प्रदेश के एक बड़ बोले भाजपा के कैबनेट मंत्री नें एक जन सभा में गैर जिम्मेदार ब्यान बाजी का बेसुरा राग अलाप दिया । यह मामला मध्य प्रदेश के उच्च न्यायलय में पहुँच गया।परिणाम की गंभीरता को भापते हुए कर्नल सोफिया कुरैशी पर टिप्पणी को लेकर भाजपा मंत्री के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने का आदेश मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय ने दिया।

उच्च न्यायलय ने पुलिस महानिदेशक को आदेश दिया कि आज शाम 6 बजे तक एफआईआर दर्ज करने का निर्देश दिया और चेतावनी दी कि ऐसा न करने पर न्यायालय की अवमानना ??अधिनियम के तहत कार्यवाही की जाएगी।वही मंत्री के वकील ने तर्क दिया कि अदालत का आदेश पूरी तरह से अख़बारों की रिपोर्टों पर आधारित था।अदालत ने कहा कि भारतीय न्याय संहिता(बीएनएस)की धारा 196,जो धर्म के आधार पर विभिन्न समूहों के बीच दुश्मनी भड़काने वाले भाषणों या कार्यों को दंडित करती है,इस मामले में प्रथम दृष्टया लागू होती है।मध्य प्रदेश में मंगलवार को उस समय राजनीतिक विवाद खड़ा हो गया।राज्य के आदिवासी मामलों के मंत्री विजय शाह ने ऑपरेशन सिंदूर पर मीडिया को जानकारी देने वाली दो महिला सैन्य अधिकारियों में से एक कर्नल सोफिया कुरैशी के बारे में टिप्पणी की।कांग्रेस पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने टिप्पणी को 卐शर्मनाक और अश्लील卐 कहा।विपक्ष की ओर से व्यापक निंदा और अपनी ही पार्टी के भीतर आलोचना के बाद उन्होंने मंगलवार को माफ़ी मांगी।

या सुप्रीम कोर्ट के नहले पर राष्ट्रपति के दहले से निकल पाएगा कोई सर्वमान्य हल, लोग हुए उत्सुक?

भारत में विधायिका-कार्यपालिका बनाम न्यायपालिका का टकराव अब कम होने का नाम ही नहीं ले रहा है, योंकि सुप्रीम कोर्ट की ओर से तमिलनाडु सरकार बनाम राज्यपाल मामले में सुप्रीम कोर्ट द्वारा विधेयक पर फैसला लेने की समयसीमा तय किए जाने पर पहले तो उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ द्वारा कोर्ट के फैसले पर आपाि जताई गई, वहीं अब राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भी सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर कतिपय महत्वपूर्ण सवाल उठाए हैं, जिनका जवाब सर्वोच्च न्यायालय को देना चाहिए।

बता दें कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने गत 8 अप्रैल 2025 को दिए गए सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर दर्जनाधिक नीतिगत सवाल उठाए हैं। क्योंकि सुप्रीम कोर्ट ने तमिलनाडु सरकार बनाम राज्यपाल मामले में आदेश दिया था कि राज्यपालों और राष्ट्रपति को एक तय समय में उनके समक्ष पेश विधेयकों पर फैसला लेना होगा। याद दिला दें कि सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले पर काफी हंगामा हुआ था, जो अब भी विभागीय शीत युद्ध के रूप में जारी है। इसी का परिणाम है कि अब राष्ट्रपति ने इस पर आपत्ति जताई है और साफ साफ कहा है कि जब देश के संविधान में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है, तो फिर सुप्रीम कोर्ट किस आधार पर यह फैसला दे सकता है।

उल्लेखनीय है कि राष्ट्रपति ने सुप्रीम कोर्ट से राज्यपाल की शक्तियों, न्यायिक दखल और समयसीमा तय करने जैसे विषयों पर स्पष्टीकरण मांगा है। क्योंकि सुप्रीम कोर्ट ने तमिलनाडु सरकार बनाम राज्यपाल मामले में दिए अपने फैसले में स्पष्ट कहा था कि राज्यपाल के पास कोई वीटो पावर नहीं है। राज्यपाल की ओर से भेजे गए विधेयक पर राष्ट्रपति को तीन महीने के भीतर फैसला लेना होगा। अगर तय समयसीमा में फैसला नहीं लिया जाता तो राष्ट्रपति को राज्य को इसकी वाजिब वजह बतानी होगी। यही नहीं सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में यह भी कहा था कि राष्ट्रपति किसी विधेयक को पुनर्विचार के लिए राज्य विधानसभा के पास वापस भेज सकते हैं। वहीं यदि विधानसभा उस विधेयक को फिर से पारित करती है तो राष्ट्रपति को उस पर अंतिम फैसला लेना होगा।

सुप्रीम कोर्ट ने ये भी कहा था कि अनुच्छेद 201 के तहत राष्ट्रपति के फैसले की न्यायिक समीक्षा की जा सकती है। अगर राज्यपाल ने मंत्रिपरिषद की सलाह के खिलाफ जाकर फैसला लिया है तो सुप्रीम कोर्ट के पास उस विधेयक को कानूनी रूप से जांचने का अधिकार होगा। यही वजह है कि राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू ने सुप्रीम कोर्ट से पूछे 14 सवाल पूछे हैं, जो इस प्रकार हैं- पहला, राज्यपाल के समक्ष अगर कोई विधेयक पेश किया जाता है तो संविधान के अनुच्छेद 200 के तहत उनके पास क्या विकल्प हैं? दूसरा, क्या राज्यपाल इन विकल्पों पर विचार करते समय मंत्रिपरिषद की सलाह से बंधे हैं? तीसरा, क्या अनुच्छेद 200 के तहत राज्यपाल द्वारा लिए गए फैसले की न्यायिक समीक्षा हो सकती है? चतुर्थ, क्या अनुच्छेद 361 राज्यपाल द्वारा अनुच्छेद 200 के तहत लिए गए फैसलों पर न्यायिक समीक्षा को पूरी तरह से रोक सकता है? पांचवां, क्या अदालतें राज्यपाल द्वारा अनुच्छेद 200 के तहत लिए गए फैसलों की समयसीमा तय कर सकती हैं, जबकि संविधान में ऐसी कोई समयसीमा तय नहीं की गई है? छठा, क्या अनुच्छेद 201 के तहत राष्ट्रपति द्वारा लिए गए फैसले की समीक्षा हो सकती है? सातवाँ, क्या अदालतें अनुच्छेद 201 के तहत राष्ट्रपति द्वारा फैसला लेने की समयसीमा तय कर सकती हैं?

आठवां, अगर राज्यपाल ने विधेयक को फैसले के लिए सुरक्षित रख लिया है तो क्या अनुच्छेद 143 के तहत सुप्रीम कोर्ट को सुप्रीम कोर्ट की सलाह लेनी चाहिए? नवम, क्या राज्यपाल और राष्ट्रपति द्वारा क्रमश: अनुच्छेद 200 और 201 के तहत लिए गए फैसलों पर अदालतें लागू होने से पहले सुनवाई कर सकती हैं। दशम, क्या सुप्रीम कोर्ट अनुच्छेद 142 के द्वारा राष्ट्रपति और राज्यपाल की संवैधानिक शक्तियों में बदलाव कर सकता है? ग्यारह, क्या अनुच्छेद 200 के तहत राज्यपाल की मंजूरी के बिना राज्य सरकार कानून लागू कर सकती है?

बारह, क्या सुप्रीम कोर्ट की कोई पीठ अनुच्छेद 145(3) के तहत संविधान की व्याख्या से जुड़े मामलों को सुप्रीम कोर्ट की पांच जजों की बेंच को भेजने पर फैसला कर सकती है? तेरह, क्या सुप्रीम कोर्ट ऐसे निर्देश/आदेश दे सकता है जो संविधान या वर्तमान कानूनों मेल न खाता हो? चौदह, क्या अनुच्छेद 131 के तहत संविधान इसकी इजाजत देता है कि केंद्र और राज्य सरकार के बीच विवाद सिर्फ सुप्रीम कोर्ट ही सुलझा सकता है?

दरअसल, ये ऐसे सवाल हैं जिनके जवाब देने में सुप्रीम कोर्ट को काफी माथापच्ची करनी होगी। क्योंकि ये सवाल उसी नौकरशाही द्वारा तैयार किये गए होंगे, जिसका परोक्ष शिकंजा खुद कोर्ट भी महसूस करता आया है और इससे निकलने के लिए कई बार अपनी छटपटाहट भी नहीं छिपा पाता है। इसलिए सुप्रीम जवाब का इंतजार अब नागरिकों और सरकार दोनों को है, ताकि एक और %लीगल पोस्टमार्टम% किया जा सके। इसलिए लोगों के जेहन में यह बात उठ रही है कि क्या सुप्रीम कोर्ट के नहले पर राष्ट्रपति के दहले से निकल पाएगा कोई सर्वमान्य हल?

पहलगाम त्रासदी-नफरत की तेज़ होती आंधी

इस हत्याकांड से सारा देश गहन शोक में डूब गया। यद्यपि आतंकवादियों ने पर्यटकों की हत्या उनके धर्म की पहचान करके की थी, लेकिन हमले का शिकार होने वालों में एक स्थानीय मुसलमान घोड़े वाला, जो पर्यटकों के साथ आया था, भी था। वह तब मारा गया जब उसने आतंकियों का विरोध किया। कश्मीरी कुलियों ने पर्यटकों को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाया और कश्मीरियों ने अपने घरों और मस्जिदों के दरवाजे मेहमानों के लिए खोल दिए। कश्मीर में बंद का आयोजन किया गया और 'हिंदू मुस्लिम एकता' का संदेश देने वाले कई जुलूस निकाले गए। सारे देश में मुसलमानों और अन्यों ने मोमबत्ती जुलूस निकाले और शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

लगभग इन्हीं तारीखों में मोदीजी की कश्मीर यात्रा तय की गई थी। लेकिन निर्धारित तिथि के कुछ ही दिन पहले उसे रद्द कर दिया गया। घटना के समय वे सऊदी अरब में थे। घटना के बाद वे अपनी यात्रा अधूरी छोड़कर स्वदेश रवाना हो गए। किंतु वापिस अपने के बाद कश्मीर जाने के बजाए वे एक चुनावी रैली में भाग लेने के लिए बिहार चले गए जहां उन्होंने आतंकियों को अंग्रेजी में कड़ी चेतावनी दी। आतंकी मुसलमान थे और मारे गए लोग हिंदू थे। इसे दबे-छिपे ढंग से इस घटना का सबसे महत्वपूर्ण पहलू बना दिया गया।

डोनाल्ड ट्रंप ने दोनों देशों के बीच संघर्ष विराम की घोषणा की। मोदीजी ने इस बारे में कुछ अलग बात कही। इस बीच गोदी मीडिया की बन आई और उसने नफरत फैलाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। वे अपने शानदार आरामदायक स्टूडियो में बैठे-बैठे पाकिस्तान के विभिन्न शहरों पर भारतीय सेना का कब्जा होने की खबरें देते रहे। गोदी मीडिया अपने निम्नतम स्तर पर पहुंच गया और उसने पत्रकारिता की आचार संहिता के उल्लंघन का नया रिकार्ड कायम किया, जिसे वह बहुत पहले ताक पर रख चुका है।

इस सबका सबसे बुरा नतीजा मुसलमानों के प्रति नफरत में बढ़ोत्तरी के रूप में सामने आया। सारा देश इस्लामोफोबिया के सैलाब में डूब गया और इसकी तीव्रता और स्तर अकल्पनीय ऊंचाई तक पहुंच गए। लातूर में एक मुसलमान पर पाकिस्तानी होने का लेबिल चस्पा कर उसकी बुरी तरह पिटाई गई। उसे इतना अपमान महसूस हुआ कि उसने आत्महत्या कर ली। उत्तराखंड के एक हॉस्टल में कश्मीरी छात्रों को आधी रात को बाहर निकाल दिया गया और उन्हें देहरादून विमानतल के बाहर रात बितानी पड़ी। सबसे बुरी हरकत मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार के मंत्री विजय शाह ने की। उन्होंने भारतीय सेना की प्रवक्ता कर्नल सोफिया कुरैशी को 'आतंकवादियों की बहन' बताया। बाद में बात संभालने के लिए उन्होंने माफी मांग ली।

सेंटर फॉर स्टडी ऑफ सोसायटी एंड सेक्यूलरिज्म, मुंबई की मिथिला राऊत ने दैनिक लोकसत्ता (मराठी) में प्रकाशित अपने एक लेख में विभिन्न समाचारपत्रों में छपी खबरों के आधार पर मुसलमानों के खिलाफ हुई नफरत-जनित हरकतों की जानकारी प्रस्तुत की है। उनके लेख के मुताबिक पहलगाम हमले के बाद कई मुस्लिम विरोधी घटनाएं हुईं। ऐसी शर्मनाक घटनाओं में से एक उत्तरप्रदेश के शामली के ठोडा गांव में हुई जहां गोविंद ने सरफराज पर हमला किया। गोविंद ने कहा कि तुमने हमारे 26 मारे हम भी तुम्हारे 26 मारेंगे! पंजाब के डेरा बस्सी में यूनिवर्सल समूह के छात्रावास में कश्मीरी छात्रों पर हमला किया गया।

मसूरी में रहने वाले शब्बीर धर नाम के एक कश्मीरी, जो शाल बेचते थे, और उनके सहायक पर हमला किया गया और उन्हें पहलगाम की हत्याओं का कुसूरवार बताते हुए धमकाया गया कि यदि वे दुबारा वहां नजर आए तो बहुत बुरा होगा। हरियाणा के रोहतक नाम के गांव में मुस्लिम निवासियों को धमकाया गया और उनसे 2 मई तक गांव छोड़ देने के लिए कहा गया।

ये तो केवल कुछ घटनाएं हैं जिनका विवरण समाचारपत्रों से पता लगा है। लेकिन इनसे यह साफ जाहिर है कि नफरत किस हद तक बढ़ गई है। समाज में माहौल धीरे-धीरे खराब हो रहा है। हिंदू दक्षिणपंथियों ने पहले से ही मुस्लिम विरोधी वातावरण बनाया हुआ है।

भारत की वॉटर स्ट्राइक से बिलबिलाने लगा पाकिस्तान

22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पाकिस्तान द्वारा पोषित और प्रेषित आतंकियों ने निर्दोष नागरिकों का धर्म पूछकर नृशंस हत्या की। पहलगाम में आतंकी हमले के बाद ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से भारत ने जहां पाकिस्तान को सैन्य मोर्चे पर तबाह कर दिया वहीं, उससे पहले सिंधु जल समझौते को स्थगित करने के फैसले से पानी की एक-एक बूंद के लिए तरसा दिया है। भारत ने सिंधु जल संधि को ऐसे समय में निलंबित किया है जब पाकिस्तान पहले से ही जल संकट का सामना कर रहा है। पाकिस्तान के सिंध और पंजाब प्रांत में छह नई नहरें बनाने की योजना भी विवादों में फंसी है। इतिहास के आलोक में अगर बात की जाए तो सिंधु जल समझौते के अंतर्गत भारत और पाकिस्तान के बीच सिंधु घाटी को 6 नदियों में विभाजित करने को लेकर नौ साल तक वार्ता चली और भारत के प्रथम प्रधानमंत्री रहे जवाहर लाल नेहरू और पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति अयूब खान के मध्य 19 सितंबर 1960 में सिंधु जल संधि विश्व बैंक की मध्यस्थता से कराची में समझौता हुआ।

इस संधि के तहत सिंधु बेसिन की तीन पूर्वी नदियों रावी, ब्यास और सतलुज का पानी भारत को आवंटित किया गया। वहीं तीन पश्चिमी नदियों सिंधु, झेलम और चिनाब के जल का 80 फीसदी हिस्सा पाकिस्तान को आवंटित किया गया। समझौते में जिस तरह से जल का बंटवारा किया गया उससे तत्कालीन भारत के प्रधानमंत्री और सरकार की रीति—नीति का समझा जा सकता है। पीएम नेहरू ने देशहित की बजाय पाकिस्तान के हितों का अधिक ध्यान रखा। यह संधि पाकिस्तान में कृषि और हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट के लिए बहुत अहम है और पाकिस्तान में 80 प्रतिशत सिंचाई के पानी की आपूर्ति इन्हीं नदियों के पानी से होती है। कई शहरों के लिए पेयजल की आपूर्ति भी इस नदी से की जाती है। भारत और पाकिस्तान के बीच 65 साल पहले हुई इस जल संधि के तहत दोनों देशों के बीच नदियों के जल प्रबंधन को लेकर समझौता हुआ था। नदियों को बांटने का ये समझौता कई युद्धों, मतभेदों और झगड़ों के बावजूद 65 वर्षों से अपने स्थान पर यथावत रहा। लेकिन जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए हमले में 26 लोगों के मारे जाने के बाद भारत ने जिन कड़े कदमों की घोषणा की उनमें यह सबसे बड़ी कार्रवाई माना जा रहा है। भारत द्वारा संधि को निलंबित करना इसकी स्थापना के बाद से पहली बार है, जो सीमा पार आतंकवाद से जुड़ी जल कूटनीति में बदलाव का संकेत है। यह भारत के दृष्टिकोण में बदलाव को दर्शाता है।

2016 में उरी में भारतीय सेना के एक शिविर पर हमले के बाद डेढ़ सप्ताह बाद हुई एक समीक्षा बैठक में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था, खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते हैं। प्रधानमंत्री मोदी के इस बयान का इशारा सिंधु जल समझौते की ही ओर था। 2019 में पुलवामा में सुरक्षाबलों पर हमले के बाद केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने बयान देते हुए कहा था, सरकार ने पाकिस्तान को पानी के वितरण को रोकने का फैसला किया है। अगस्त 2019 में भारत के तत्कालीन जल संसाधन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा था, सिंधु जल संधि का उल्लंघन किए बिना पाकिस्तान को जाने वाले पानी को रोकने के लिए काम शुरू हो गया है।

भारतीय सेना से करारी शिकस्त के बाद पाकिस्तान अब पानी को लेकर भारत के सामने गिड़गिड़ाने लगा है। पाकिस्तान की सरकार ने 14 मई को भारत के जल शक्ति मंत्रालय को चिट्ठी लिखकर सिंधु जल समझौते को स्थगित करने को लेकर दोबारा विचार करने की अपील की है। वहीं, एक महत्वपूर्ण बात और भी है कि पाकिस्तान की

ये अपील तब की गई जब भारत चिनाब नदी पर बगलिहार और सलाल जलविद्युत परियोजनाओं में फ्लशिंग और डिसिल्टिंग का काम शुरू कर दिया है। पाकिस्तान के जल संसाधन सचिव सय्यद अली मुर्तज़ा ने भारत को लिखी चिट्ठी में कहा, सिंधु जल समझौता स्थगित होने की वजह से पाकिस्तान में खरीफ की फसल के लिए पानी का बड़ा संकट खड़ा हो गया है। पाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री इशाक डार ने 13 मई को कहा कि अगर भारत सिंधु जल संधि को फिर से शुरू नहीं करता है और हमारी तरफ आने वाले पानी को मोड़ने की कोशिश करता है तो दोनों देशों के बीच लागू हुआ संघर्ष विराम खतरे में पड़ सकता है।

सिंधु जल संधि पर चर्चा के लिए पाकिस्तान की ये पेशकश उसकी छटपटाहट को साफ दिखा रही है। यह पहली बार नहीं था जब भारत सरकार ने 1960 में दोनों देशों के बीच हुई इस संधि में बदलाव की मांग की थी। दो साल पहले भारत ने पाकिस्तान को इस संबंध में नोटिस भेजा था लेकिन इस नोटिस में सिर्फ बदलावों के बारे में बात की गई थी। हालांकि अगस्त 2024 में भेजे नोटिस में भारत ने बदलावों के साथ-साथ समझौते की %समीक्षा% करने की भी बात की थी। इसमें सीमा पार से आतंकवादी गतिविधियों% का भी उल्लेख किया गया था। इसमें भी भारत की ओर से कहा गया था कि %सीमा पार से आतंकवाद इस समझौते के सुचारू रूप से संचालन में बाधा है। लेकिन पाकिस्तान ने इस पर कोई उत्तर नहीं दिया, अब जबकि भारत ने समझौते को स्थगित कर दिया है तो पाकिस्तान घुटनों पर आ गया है।

15 मई को एक कार्यक्रम में संवाददाताओं ने विदेश मंत्री एस. जयशंकर से जब सिंधु जल समझौते को लेकर प्रश्न किया, तो उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि यह समझौता अभी निरस्त ही रहेगा। भारत सरकार इस पर पुनर्विचार करने के लिए तैयार नहीं है और इस मामले में पाकिस्तान के साथ बातचीत नहीं होगी। विदेश मंत्री के ताजा बयान से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राष्ट्र के नाम संबोधन में स्पष्ट कर चुके हैं कि खून और पानी साथ नहीं बह सकते हैं।सिंधु जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान की जल सुरक्षा को खतरा है, क्योंकि इसकी 80 प्रतिशत कृषि भूमि इन नदियों पर निर्भर है। इस व्यवधान से खाद्य सुरक्षा, नगरीय जल आपूर्ति और विद्युत उत्पादन पर प्रभाव पड़ेगा साथ ही पाकिस्तान के सकल घरेलू उत्पाद में सिंधु नदी तंत्र के 25 प्रतिशत योगदान के कारण आर्थिक अस्थिरता भी उत्पन्न होगी। नदी प्रवाह डेटा को रोकने की भारत की क्षमता से पाकिस्तान की सुभेद्यता और बढ़ जाएगी तथा बाढ़ तत्परता और जल संसाधन प्रबंधन में बाधा उत्पन्न होगी। भावार्थ यह है कि आने वाले समय में पाकिस्तान में जल संकट से सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याएं बढ़ना तय है। पाकिस्तान के पंजाब और सिंध प्रांत में जल बंटवारे को लेकर पुराना विवाद है। वर्तमान जल संकट ये विवाद और गहराएगा।

भारत अब अपने हिस्से की तीनों नदियों रावी, ब्यास और सतलुज के जल को अपने लिए प्रयोग करने की योजना बना रहा है। इस पर तुरंत काम शुरू कर दिया गया है। इसके अलावा, मध्यकालिक और दीर्घकालिक योजनाओं को भी अंतिम रूप दिया जा रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार, भारत के इन कदमों से पाकिस्तान को लंबे समय में नुकसान पहुंचना अवश्यम्भावी है। राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में प्रधानमंत्री मोदी ने स्पष्ट तौर पर कहा कि पाकिस्तान से बात होगीज तो टेरेरिज्म पर होगीज पाकिस्तान से बात होगी..तो पीओके पर होगी। अब पाकिस्तान को यह तय करना है कि वो आतंकवादियों का साथ देगा या फिर अपने प्यासे खेतों और नागरिकों की प्यास बुझाने के लिये शांति और शालीनता के मार्ग का चुनाव करेगा।

हिंदू संगठन बोले- बीमारी ठीक करने का झांसा दे रहे; कमरे में 20 से ज्यादा लोग थे

कवर्धा में धर्मांतरण को लेकर बवाल

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। कवर्धा जिले में धर्मांतरण का मामला सामने आया है। आदर्श नगर क्षेत्र के एक घर में बंद कमरे में प्रार्थना सभा चल रही थी और वहां कई अलग-अलग धर्म और मिशनरी समर्थक के लोग मौजूद थे। महिलाएं अपने बच्चों को लेकर पहुंची थी। इसकी जानकारी मिलते ही विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं वहां पहुंच गए।

मामला कोतवाली थाना क्षेत्र का है। विहिप कार्यकर्ताओं ने मौके पर पहुंचकर जय श्री राम के नारे लगाए और हंगामा किया। उनका आरोप है कि फादर थॉमस और उनकी पत्नी यहां गुप्त रूप से धर्मांतरण करा रहे थे। जब वे विरोध करने लगे तो मिशनरियों से झूमाझटकी की स्थिति बन गई।

अंदर कमरे में हुई घटना का वीडियो भी सामने आया है। यहां बड़ी संख्या में लोग दिखे। साथ ही बाइबिल भी रखी हुई थी। VHP कार्यकर्ताओं ने कहा कि हिंदुओं को कैंसर ठीक करने, जादू टोना भगाने जैसे झांसे में लेकर ब्रेन वॉश कर रहे थे।

हिंदू जागरण मंच के सदस्य सौरभ सिंह ने कहा कि फादर थॉमस, होली किंगडम स्कूल का प्रिंसिपल है। उस पर पहले भी स्कूल में बच्चों का जबरन धर्मांतरण कराने के आरोप लग चुके हैं। एक मां ने शिकायत दर्ज कराई थी कि फीस माफ करने के नाम वे धर्मांतरण करा रहे हैं।

जांच कर दोषियों पर कार्रवाई की मांग: सौरभ सिंह ने कहा कि जब हमारी टीम पहुंची तो बचने के लिए वे लोग महिलाओं को आगे कर रहे थे तो झूमाझटकी हो गई। हिंदू संगठनों ने प्रशासन से मांग की है कि ऐसे कार्यक्रमों पर रोक लगाई जाए और धर्मांतरण की घटनाओं की गंभीरता से जांच कर दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की जाए। सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने मामला शांत कराया।

ASP पुष्पेंद्र बघेल के मुताबिक, विहिप के शिकायत के बाद मामला दर्ज कर लिया गया है। पता चला है कि, फादर थॉमस पिछले 25 साल से यहां स्कूल भी संचालित करते हैं और प्रार्थना कराते हैं। वीडियो में फादर थॉमस भी ऐसा ही कुछ कहते सुनाई दिए हैं। फिलहाल जांच की जा रही है। जिसके बाद कार्रवाई की जाएगी।

घर में लगी आग...बुजुर्ग जिंदा जला, पैरालिसिस के कारण भाग नहीं सका

पत्नी शौच के लिए बाहर गई थी

मीडिया ऑडीटर, दुर्ग (निप्र)। छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में एक घर में आग लगने से अंदर लेटा बुजुर्ग जिंदा जल गया। 65 साल का बुजुर्ग लकवा से पीड़ित था। आग लगने पर वह घर से बाहर नहीं निकल पाया। वहीं उनकी पत्नी शौच के लिए बाहर गई थी। मामला उतई थाना क्षेत्र के परसाई गांव का है।

एएसपी पद्मश्री तंवर ने बताया की घटना शनिवार रात की है। उन्हें सूचना मिली थी कि परसाई गांव में आग लग गई है। तुरंत दमकल को सूचित किया गया। इसके बाद उतई पुलिस भी मौके पर पहुंची। पुलिस ने वहां जाकर पाया कि घर के अंदर बुजुर्ग शिव प्रसाद खिलाड़ी मौजूद है।

जब आग पर काबू पाया गया और अंदर जाकर देखा गया तो शिव प्रसाद पूरी तरह से झुलस चुका था। उसके झुलसे हुए शव को बाहर निकाला गया। इसके बाद पंचनामा कार्रवाई कर शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया है। घर में आग कैसे लगी इसकी भी पुलिस जांच कर रही है। इधर परिजन शोक में हैं।

पुलिस ने पूछताछ में पाया कि शिव प्रसाद पैरालिसिस ग्रस्त था, इसलिए वो घर पर ही रहता था। उसकी पत्नी शौच के लिए बाहर गई थी। जब घर में आग लगी तब घर में कोई नहीं था। लकवाग्रस्त होने से बुजुर्ग भाग नहीं सका और उसकी मौत हो गई। घर में बुजुर्ग पत्नी के साथ रहता था। उनके 2 बेटे हैं, जो अपने परिवार के साथ भिलाई में रहते हैं। बुजुर्ग की मौत की सूचना बेटों को दी गई है।

एएसपी तंवर ने बताया कि प्रारंभिक जांच में घर में आग शार्ट सर्किट से लगने की आशंका है। आग धीरे-धीरे फैल गई और देखते ही देखते आग ने पूरे घर को अपनी चपेट में ले लिया। आग इतनी भीषण थी कि घर का सारा सामान जलकर राख हो गया।

लड़कियों के अंडरवियर चुराने का वीडियो, 2 साल से परेशान थीं

मीडिया ऑडीटर, सरगुजा (एजेंसी)। सरगुजा के मैनपाट में महिलाओं और लड़कियों के अंडर गारमेंट्स चोरी करते एक युवक सीसीटीवी में कैद हुआ है। वेदांता स्किल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन के ट्रेनिंग सेंटर में लड़कियां और महिलाएं 2 साल से अंडर गारमेंट्स चोरी की समस्या से परेशान थीं। ट्रेनिंग सेंटर में करीब 40 से 45 लड़कियां हैं।

लगातार अंडर गारमेंट्स की चोरी होने की शिकायतों के बाद ट्रेनिंग सेंटर प्रबंधन ने सीसीटीवी कैमरे लगवाए। शनिवार शाम अंडर गारमेंट्स की चोरी करते हुए युवक कैमरे में कैद हो गया। मामले की शिकायत कमलेश्वरपुर थाने में दर्ज कराई गई है।

जानकारी के मुताबिक, मैनपाट के रोपाखार में वेदांता की ओर से संचालित स्किल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन के तहत सिलाई का कार्य सिखाया जाता है। यहां हर 3 महीने के बैच में 45 से 50 युवतियां और महिलाएं सिलाई की ट्रेनिंग लेने के लिए आती हैं।

पिछले 2 सालों में अलग-अलग बैच की युवतियों और महिलाओं ने मामले की शिकायत की। सिलाई सेंटर में रहने वाली महिलाओं और युवतियों को ट्रेनिंग के दौरान रहने की सुविधा भी दी जाती है। ट्रेनी नहाने के बाद कपड़े बाहर सुखाते हैं।

सेंटर में अंडर गारमेंट्स की चोरी की शिकायतों को देखते हुए कुछ दिनों पहले सीसीटीवी कैमरे इंस्टॉल कराए गए थे। शनिवार को फिर से ट्रेनिंग सेंटर में युवतियों और महिलाओं के अंडर गारमेंट्स की चोरी हो गई। चोरी की शिकायत के बाद सीसीटीवी कैमरे के फुटेज की जांच की तो अंडर गारमेंट्स की चोरी करता एक युवक दिखा।

थाने में शिकायत, युवक की पहचान नहीं

सीसीटीवी फुटेज सामने आने पर इसकी शिकायत कमलेश्वरपुर थाने में दर्ज कराई गई है। युवक की पहचान नहीं हो पाई है। युवक सिर्फ अंडर गारमेंट्स क्यों चुराता है, इसकी भी जानकारी नहीं मिल सकी है। महिलाओं और युवतियों के अन्य कपड़े चोरी नहीं किए गए हैं।

कमलेश्वरपुर थाना प्रभारी नवल किशोर दुबे ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। अभी एफआई दर्ज नहीं हुई है।

कोरबा में बाजार से सब्जी लेकर पति घर पहुंचा

सब्जी थैले में कुंडली मारकर बैठा था सांप, पत्नी ने देखा तो मचाया शोर

मीडिया ऑडीटर, कोरबा (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में सब्जी के थैले से सांप निकला। शनिवार शाम को एक शख्स बाजार से सब्जी लेकर घर पहुंचा था। जब उसकी पत्नी थैली से सब्जियां निकाल रही थी, तब उन्होंने देखा कि एक जहरीला ब्लैक करैत सांप कुंडली मारकर बैठा है।

अचानक नजर पड़ते ही महिला शोर मचाते हुए कमरे से बाहर भाग खड़ी हुई। इसके बाद घरवालों ने इसकी जानकारी स्नेक कैचर की रेस्क्यू टीम को दी गई। सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची रेस्क्यू टीम ने तुरंत सांप को सुरक्षित पकड़ा और जंगल में छोड़ दिया।

यह घटना कोरबा जिले के दादर खुर्द गांव की है। इसी गांव के रहने वाले मोहन साहू शनिवार की शाम सब्जी खरीदने मुड़ापार बाजार गए थे। रोज की तरह उन्होंने कई सब्जियां खरीदी और उन्हें एक थैले में भरकर घर वापस लौट आए।

घर पहुंचते ही उन्होंने थैला पत्नी को दे दिया। इसके बाद पत्नी रसोई में बैठकर थैले से सब्जी निकालने लगी। तभी उनकी नज़र थैले के अंदर कुछ अजीब सी हलचल पर पड़ी। जब उन्होंने ध्यान से देखा तो उनके होश उड़ गए।

सब्जियों के बीच एक ज़हरीला ब्लैक करैत सांप कुंडली मारे बैठा था। पत्नी की चीख सुनकर मोहन साहू के साथ घर के अन्य सदस्य भी वहां पहुंचे। देखा कि थैले के अंदर सच में एक सांप मौजूद है। यह देखकर घर में अफरा-तफरी मच गई।

रेस्क्यू टीम ने किया सुरक्षित रेस्क्यू: मोहन साहू ने तत्काल सांप रेस्क्यू टीम को सूचना दी। टीम के सदस्य गप्पू केवट और उमेश यादव कुछ ही देर में मौके पर पहुंचे। उन्होंने सावधानी से सांप को थैले से बाहर निकाला और प्लास्टिक के जार में उसे किसी तरह बंद किया। सुरक्षित तरीके से उसे पकड़ने के बाद सांप को जंगल में छोड़ दिया गया है।

मोहन साहू का कहना है कि हो सकता है जब वह बाजार में सब्जी खरीद रहे थे, उसी दौरान यह सांप किसी थैले में घुस गया होगा। बाजार से लौटते ही उनकी पत्नी ने सब्जी निकालनी शुरू की थी। अगर जरा भी देर हो जाती या गलती से हाथ लग जाता, तो यह घटना जानलेवा हो सकती थी।

रेस्क्यू टीम ने की सावधानी बरतने की अपील: रेस्क्यू टीम ने बताया कि वर्तमान मौसम में तापमान में उतार-चढ़ाव की वजह से सांप बिलों से बाहर निकल रहे हैं। सांप खुले स्थानों में छिपने की कोशिश करते हैं। इस घटना के बाद स्थानीय प्रशासन और सर्प मित्रों ने सब्जी विक्रेताओं, ठेले चालकों और आम लोगों को सलाह दी है कि वे अपने सामान और थैलों की नियमित रूप से जांच करें। थैलों को खुले में न छोड़ें और सब्जी या अन्य सामग्री को इस्तेमाल से पहले अच्छे से जांच लें।

रायपुर में सराफा कारोबारी की पत्नी की मिली लाश

घर में फंदे से लटका था शव; मायके वालों को तंत्र-मंत्र के बाद हत्या का शक

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)।

राजधानी रायपुर में सराफा कारोबारी की पत्नी की लाश फांसी के फंदे पर लटकी मिली। सोना सोनी (42 साल) सदर बाजार में अपने ससुर, पति और दो बच्चों के साथ घर पर रहती थी। उनके पति प्रवाल सोनी की पुरानी बस्ती में ज्वेलरी शॉप है। रविवार सुबह घर के तीसरी मंजिल के स्टोर रूम में उनका शव मिला।

मामला कोतवाली थाना क्षेत्र का है। जानकारी के मुताबिक, 5 दिन पहले सोना के छोटे बेटे उदय (12 साल) की भी मौत हो गई थी। मृतिका के पास से एक सुसाइड नोट मिला है। जिसमें उसने अपने बेटे के पास आने की बात कही। वहीं, मायके वालों ने तंत्र-मंत्र के बाद सोना की हत्या की बात कही है।

सोना के गले में दुपट्टे का फंदा बंधा हुआ था। सोना के भाई डॉक्टर गौरव का कहना है कि फंदा ऊपर जिस लकड़ी पर बंधा हुआ था। वह काफी ऊंचाई पर है वहां तक बिना सीढ़ी या टेबल के चढ़ना संभव नहीं है।

इसके अलावा आसपास के हर सामान में धूल की मोटी परत जमी हुई है। ऊपर चढ़ने के लिए कोई भी सामान के हटाने के मार्क नहीं है। घटना के वक्त घर में महिला के पति, ससुर और एक बेटा था।

महिला के दो बेटे 12 साल और 14 साल के हैं। महिला के अन्य भाई पारस सोनी का कहना है कि 5 दिन पहले उनके एक भांजे यानी महिला के बेटे उदय सोनी की मौत हुई थी। रात में पेट खराब होने के बाद सुबह बच्चे की घर पर लाश मिली थी।

मौत की वजह फूड प्वाइजनिंग बताई गई, लेकिन बच्चे का चेहरा पूरी तरह नीला पड़ चुका था। परिवार को उसकी मौत पर भी शक है। हालांकि इसकी पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट भी फिलहाल नहीं आई है।

तंत्र-मंत्र से लेकर जहर देने का शक: इस मामले में महिला के मायके वालों का आरोप है कि ससुराल वालों का किसी तांत्रिक से परिचय था। उसका अक्सर घर पर आना-जाना रहता था। परिजनों के मुताबिक, महिला की मौत के 2 दिन पहले उसे 50 हजार रुपए भी दिए गए। उन्हें शक है कि बच्चें की मौत और महिला की मौत के पीछे जहर देना या तंत्र-मंत्र भी हो सकता है।

सुसाइड नोट में बच्चें का किया जिक्र: पुलिस को महिला के पास से एक पेज का सुसाइड नोट मिला है। जिसमें महिला ने अपने छोटे बेटे की मौत का जिक्र किया है। इसके साथ ही लिखा है कि वह भी उसके पास आ रही है। बता दे कि महिला की शादी साल 2007 में हुई थी। परिजनों का कहना है कि शादी के बाद से ही पति शराब पीकर अक्सर विवाद भी करता था।

पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के बाद होगी पुष्टि: इस मामले में जांचकर्ता एएसआई पांडेय का कहना है कि हत्या या आत्महत्या पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के बाद ही पता चल पाएगा। फिलहाल महिला के पास से सुसाइड नोट मिला है। जिसकी हैंडराइटिंग एक्सपर्ट से जांच करवाई जाएगी। फिलहाल महिला की लाश को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया।

सचिन पायलट बोले- क्या अमेरिका ने सुरक्षा की गारंटी दी?

संसद सत्र बुलाकर सरकार स्पष्ट करे, रायपुर में मिरानिया परिवार से मिले

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ कांग्रेस के प्रभारी सचिन पायलट रविवार को रायपुर पहुंचे। यहां उन्होंने पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए कारोबारी दिनेश मिरानिया के परिवार से मिले। परिजनों से मुलाकात के बाद सचिन पायलट ने केंद्र सरकार से कई गंभीर सवाल पूछे।

उन्होंने कहा कि देश की जनता ने सरकार को पूरा समर्थन दिया है, लेकिन सरकार यह सुनिश्चित करे कि भविष्य में ऐसी घटनाएं दोबारा न हों। जो अमेरिका सीजफायर का श्रेय लेना चाह रहा है क्या उसने ऐसी गारंटी दी है? क्या पाकिस्तान से ऐसी कोई सुरक्षा गारंटी मिली है?"

सचिन पायलट ने केंद्र से संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग की, ताकि इस मुद्दे पर व्यापक चर्चा हो सके। पायलट का कहना है कि जो तथ्य सामने आ रहे हैं, उन पर सरकार को स्पष्टीकरण देना चाहिए, ताकि देश की जनता के मन में जो सवाल हैं, उनका समाधान हो सके।

सचिन पायलट ने कहा, सीजफायर की घोषणा अमेरिका के राष्ट्रपति कर रहे हैं। पहली बात की हमारा मुद्दा आतंकवाद है, लेकिन जानबूझकर कश्मीर के मुद्दे को चर्चा में लाया गया है। मुझे बड़ा खेद है कि अमेरिका के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और उनके विदेश मंत्री जब-जब इस प्रकरण के बारे में चर्चा की है तो उन्होंने एक बार भी आतंकवाद शब्द का इस्तेमाल नहीं किया है।

पायलट ने कहा कि, मध्य प्रदेश के मंत्री कर्नल सोफिया कुरैशी के बारे में गलत टिप्पणी कर रहे। उन्हें माफी मांगनी चाहिए। भाजपा के जिम्मेदार पदों पर बैठे लोग क्या कर रहे हैं? मंत्री को बर्खास्त करना चाहिए। यह क्या बताना चाहते हैं, धर्म और मजहब के नाम पर लोगों को बांटना चाहते हैं।

मुझे आश्चर्य है कि भाजपा का शीर्ष नेतृत्व इसलिए चुप बैठा है कि दो-तीन दिन में मामला ठंडा पड़ जाए और इसका जवाब हमें ना देना। पब्लिक सब सुनती है और याद रखती है।

पाक समर्थित आतंकवाद जिसे पूरा विश्व जानता था उस पर चर्चा बंद हो गई है। और न जाने कहां से कश्मीर पर चर्चा शुरू हो गई है। 1994 में नरसिम्हा राव की सरकार में दोनों सदनों में यह प्रस्ताव पारित किया था कि पीओके भारत का अभिन्न हिस्सा है।

पाकिस्तान को उसे खाली करना पड़ेगा। अब समय आ गया है कि संसद का विशेष सत्र बुलाया जाए और उस रेजोल्यूशन को दोबारा पारित किया जाए। क्योंकि पाकिस्तान लगातार गलतफहमी फैलाने की कोशिश कर रहा है। वह अपने इस काम में सफल न हो सके और पूरी दुनिया को पता होना चाहिए।

पायलट ने आगे कहा कि, पिछले 25 सालों में हिंदुस्तान की तुलना चीन से होने लगी थी, लेकिन अब जानबूझकर हिंदुस्तान-पाकिस्तान को बराबर एक तराजू में तोला जा रहा है। मैं समझता हूं कि ये भविष्य के लिए सही नहीं है।

पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद के जरिए हमारे देश में अस्थिरता पैदा करने की कोशिश करता है। उसके खिलाफ हम सब एकजुट हैं। इसलिए हम लोग सत्र की मांग करते हैं। जो ऑल पार्टी मीटिंग में प्रधानमंत्री नहीं पहुंचे उन्हें आना चाहिए ताकि हमारी एकजुटता को देश और दुनिया देख सके।

स्टालिन की गैर-भाजपा शासित 8 मुख्यमंत्रियों को चिट्ठी

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने रविवार को पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश, तेलंगाना, केरल, झारखंड, पंजाब और जम्मू-कश्मीर (सभी गैर-भाजपा शासित राज्य) के 8 राज्यों के मुख्यमंत्रियों को चिट्?ठी लिखी। इसमें उन्होंने राष्ट्रपति के सुप्रीम कोर्ट से मांगे गए संदर्भ का विरोध करने की अपील की है। स्टालिन ने लिखा- हम सभी जानते हैं कि जब किसी मुद्दे पर कोर्ट के आधिकारिक फैसले से पहले ही निर्णय लिया जा चुका हो, तब सुप्रीम कोर्ट के सलाह देने के क्षेत्राधिकार का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। फिर भी भाजपा सरकार ने राष्ट्रपति पर संदर्भ मांगने के लिए जोर दिया है, जो उनके भयानक इरादे बताता है। इसके बावजूद भाजपा सरकार ने संदर्भ मांगने पर जोर दिया है, जो उनके भयावह इरादे की ओर इशारा करता है। मैं गैर-भाजपा शासित सभी राज्यों से अपील करता हूं कि राष्ट्रपति द्वारा सुप्रीम कोर्ट में भेजे गए संदर्भ का विरोध करें।

13 वर्षीय रेप विक्टिम ने बच्ची को जन्म दिया

राजकोट (एजेंसी)। राजकोट में रविवार को दुष्कर्म पीड़ित 13 वर्षीय मासूम ने एक स्वस्थ बच्ची को जन्म दिया। खेलने-कूदने की उम्र में मां बनी इस बच्ची के साथ उसके ही चचेरे भाई और उसके दोस्त ने दुष्कर्म किया था। बच्ची को 33 हफ्ते का गर्भ था। 12 मई को गुजरात हाईकोर्ट ने अबॉर्शन की इजाजत दी थी। मेडिकल कॉम्प्लीकेशन के चलते हुई डिलीवरी गुजरात हाईकोर्ट ने गर्भपात की इजाजत दी थी, लेकिन मेडिकल कॉम्प्लीकेशन की वजह से डिलीवरी करानी पड़ी। बच्ची के पेट में पल रहे भ्रूण का वजन दो किलो था। इसके अलावा नाबालिग को एनीमिया था। ऐसे में लड़की को जान का खतरा था। ऐसे में डॉक्टर्स ने अबॉर्शन की जगह सिजेरियन (ऑपरेशन से डिलीवरी) को बेहतर समझा। यह देश का पहला मामला है, जब कोर्ट ने 33 हफ्ते की प्रेग्नेंसी में अबॉर्शन की अनुमति दी थी। इससे पहले 2017 में सुप्रीम कोर्ट ने 32 हफ्ते के गर्भपात की अनुमति दी थी।

देश के 16 राज्यों में आंधी-बारिश का अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। मौसम विभाग ने रविवार को 16 राज्यों में आंधी-बारिश और तूफान का अलर्ट जारी किया है। जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में हीटवेव की चेतावनी जारी की गई है। राजस्थान में शनिवार को 3 जिलों में आंधी के साथ बारिश हुई। श्रीगंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर, चूरू समेत कई शहरों में पारा 43एष्ट से ऊपर दर्ज हुआ। मौसम विभाग ने आज राज्य के 5 जिलों में हीटवेव और 14 में बारिश का यलो अलर्ट जारी किया है। मध्य प्रदेश में शनिवार को दिन के बाद मौसम बदला, भोपाल में बूंदाबांदी और इंदौर में तेज बारिश हुई। ग्वालियर में आंधी चली। मौसम विभाग ने आज राज्य के 21 जिलों में आंधी बारिश का यलो अलर्ट जारी किया है।बिहार के 38 जिलों में आज बारिश-आंधी और आकाशीय बिजली गिरने का अलर्ट है। 26 जिलों के लिए ऑरेंज और 12 जिलों के लिए यलो अलर्ट जारी किया गया है।

मुख्यमंत्री का कर्मचारी हितैषी निर्णयों के लिऐ मध्यप्रदेश राज्य कर्मचारी संघ ने किया अभिनंदन

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि आम आदमी के जीवन को सुगम बनाने के लिए सुव्यवस्था स्थापित करना राज्य सरकार का उद्देश्य है। इस मंशा का सफल क्रियान्वयन सरकार के कर्मचारियों पर निर्भर करता है, इस दृष्टि से प्रदेश के कर्मचारी सच्चे कर्म योगी हैं। कर्मचारियों के परिश्रम और समर्पण से ही जनकल्याण और विकास के पथ पर हमारा प्रदेश अग्रसर है। कर्मचारियों की कर्तव्य निष्ठा से जनहित की योजनाओं के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश, देश के अग्रणी राज्य में शामिल हुआ है। प्रदेश के कर्मचारी सरकार और जनता के बीच नल और नील की तरह सेतु बनाने का कार्य कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव रवींद्र भवन में मध्यप्रदेश राज्य कर्मचारी संघ के अभिनन्दन समारोह को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा गत माह लिए गए कर्मचारी हितैषी निर्णयों के लिऐ मध्य प्रदेश राज्य कर्मचारी संघ ने रविंद्र भवन में उनका अभिनंदन किया। कर्मचारी संघ के सदस्यों ने अंगवस्त्रम भेंट कर मुख्यमंत्री डॉ.यादव का तिलक किया। इसके साथ ही उन्हें शॉल, श्रीफल और स्मृति चिन्ह भी भेंट किया। कर्मचारी संघ की ओर से मुख्यमंत्री डॉ.यादव को वृहद आकार की मालाएं पहनाकर उनका अभिनंदन किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्ज्वलित करने के बाद मां सरस्वती और पूर्व वरिष्ठ श्रमिक नेता स्व. दत्तोपंत ठेंगड़ी के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर विधायक श्री भगवानदास सबनानी, मध्यप्रदेश राज्य कर्मचारी संघ के प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत श्रीवास्तव तथा महामंत्री श्री जितेंद्र सिंह विशेष रूप से उपस्थित थे।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कर्मचारी संघ की ओर से कर्मचारियों को स्वास्थ्य बीमा योजना का लाभ प्रदान करने की मांग स्वीकृत करने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राज्य सरकार कर्मचारी कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है।

प्रदेश की डबल इंजन सरकार ने केंद्र सरकार का अनुसरण करते हुए प्रदेश के कर्मचारियों का महंगाई भत्ता केंद्र के समान करने का निर्णय लिया है। इसके साथ ही 9 वर्षों से लंबित हाउस रेंट अलाउंस की मांग को भी पूरा किया गया है। इसके साथ ही अधिकारियों- कर्मचारियों और उनके परिवारों की सुविधा को देखते हुए प्रदेश में स्थानांतरण नीति का क्रियान्वयन किया गया है।

मिथुन चक्रवर्ती को बीएमसी ने भेजा नोटिस

मुंबई (एजेंसी)। एक्टर और पॉलिटिशियन मिथुन चक्रवर्ती को हाल ही में (बृहन्मुंबई म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन) की तरफ से लीगल नोटिस जारी किया गया है। आरोप हैं कि मिथुन चक्रवर्ती ने मलाड स्थित प्लॉट पर अवैध निर्माण करवाया है। नोटिस में ये भी साफ किया गया है कि अगर प्रॉपर्टी मालिक की तरफ से संतुष्ट करने वाला जवाब नहीं मिलता है तो अवैध निर्माण को गिराया जाएगा और कानूनी कार्रवाई होगी। हालांकि मिथुन ने इन खबरों को बेबुनियाद बताया है। 10 मई को नगर निगम ने 101 प्रॉपर्टी की सूची बनाई है।

सीजेआई को महाराष्ट्र के चीफ सेक्रेटरी-डीजीपी ने रिसीव नहीं किया

मुंबई (एजेंसी)। चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया बनने के बाद जस्टिस बीआर गवई रविवार को पहली बार मुंबई पहुंचे। जहां उन्हें रिसीव करने चीफ सेक्रेटरी, डीजीपी और मुंबई के पुलिस कमिश्नर नहीं पहुंचे। इस पर उन्होंने महाराष्ट्र-गोवा बार काउंसिल के कार्यक्रम में निराशा जताई। सीजेआई गवई ने कहा, मैं ऐसे छोटे-मोटे मुद्दों पर बात नहीं करना चाहता, लेकिन मैं इस बात से निराश हूं कि महाराष्ट्र के बड़े अफसर प्रोटोकॉल का पालन नहीं करते। लोकतंत्र के तीनों स्तंभ समान हैं और उन्हें एक-दूसरे के प्रति सम्मान दिखाना चाहिए। सीजेआई ने कहा, अगर भारत के चीफ जस्टिस पहली बार महाराष्ट्र आ रहे हैं तो ये उम्मीद की जाती है कि यहां के चीफ सेक्रेटरी, ष्ठलक्कऔर मुंबई के पुलिस कमिश्नर को मौजूद रहना चाहिए। ऐसा न करना सोचने पर मजबूर करता है। मुंबई में महाराष्ट्र-गोवा बार काउंसिल ने सीजेआई का सम्मान समारोह रखा था। इसी दौरान जस्टिस गवई ने कहा कि जब किसी संस्था का प्रमुख पहली बार राज्य में आ रहा हो, खासकर जब वह भी उसी राज्य का हो, तो उन्हें खुद ही सोचना चाहिए कि जो व्यवहार किया गया वह सही था या नहीं।

हैदराबाद में दर्दनाक हादसा, 17 की मौत, चारमीनार के पास बिल्डिंग में आग

हैदराबाद (एजेंसी)। हैदराबाद में चारमीनार के पास गुलजार हाउस में रविवार सुबह एक इमारत में आग लग गई। हादसे में अब तक 17 लोगों की मौत हो चुकी है, जिनमें 8 बच्चे भी शामिल हैं। घटना के समय इमारत में 30 से ज्यादा लोग मौजूद थे। इनमें से 15 से ज्यादा लोगों को रेस्क्यू किया गया। फायर ब्रिगेड की 11 गाड़ियां मौके पर पहुंची थीं। आग बुझाने के लिए दमकलकर्मियों को 2 घंटे मशक्कत करनी पड़ी। आग लगने की वजह शॉर्ट सर्किट बताई जा रही है, लेकिन अभी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। वहीं, हादसे में संपत्ति के नुकसान का अंदाजा भी नहीं लगाया जा सका है।

फायर डिपार्टमेंट का कहना है कि सुबह 6ः16 बजे आग लगने की सूचना मिली, जिसके बाद टीम मौके पर पहुंची और बचाव कार्य शुरू किया। कई लोग बेहोशी की हालत में मिले और करीब 10 लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुलिस के मुताबिक, बिल्डिंग के ग्राउंड फ्लोर पर ज्वेलरी की दुकानें थीं और ऊपर के फ्लोर पर लोग रहते थे। आग दुकानों में लगी और ऊपर तक फैल गई। बिल्डिंग में सिर्फ एक संकरी सीढ़ी थी, जिससे लोग बाहर नहीं निकल सके और दम घुटने से मौत हो गई।

इसरो का सबसे भरोसेमंद रॉकेट कैसे हुआ फेल

श्रीहरिकोटा (एजेंसी)। इसरो का पीएसएलवी-सी61 मिशन तकनीकी खराबी के कारण फेल हो गया। इस मिशन में ईओएस-09 अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट को 524 किलोमीटर की सन-सिंक्रोनस पोलर ऑर्बिट में स्थापित किया जाना था।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी, इसरो का पीएसएलवी-सी61 मिशन तकनीकी खराबी के कारण फेल हो गया। इस मिशन में ईओएस-09 अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट को 524 किलोमीटर की सन-सिंक्रोनस पोलर ऑर्बिट में स्थापित किया जाना था। इसरो का यह 101वां लॉन्च मिशन था। इसरो ने मिशन फेल होने के कारणों का पता लगाने के लिए एक कमेटी बनाई है। पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल- पीएसएलवी इसरो का एक भरोसेमंद रॉकेट है, जो सैटेलाइट्स को पृथ्वी की कक्षा, खासकर पोलर और सन-सिंक्रोनस ऑर्बिट (600-800 चद्व) में लॉन्च करता है। यह चार स्टेज (सॉलिड और लिक्विड इंजन) वाला लॉन्च व्हीकल है, जो रिमोट सेंसिंग, कम्युनिकेशन और साइंटिफिक मिशन्स के लिए इस्तेमाल होता है।

ग्राउंड-लिट स्ट्रैप-ऑन मोटर्स- रॉकेट के एडिशनल बूस्टर इंजन होते हैं, जो लॉन्च के समय जमीन पर ही इग्नाइट होकर रॉकेट को शुरुआती थ्रस्ट देते हैं।

यूट्यूबर ज्योति पहलगाम हमले के पहले पाकिस्तान गई थी

हिसार (एजेंसी)। जासूसी के आरोप में पकड़ी गई यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा पहलगाम हमले से पहले पाकिस्तान गई थी। हरियाणा के हिसार के एसपी शशांक कुमार सावन ने रविवार दोपहर को कहा कि पाकिस्तानी उसे एसेट के तौर पर डेवलप कर रहे थे। वह स्पॉन्सर्ड ट्रिप पर पाकिस्तान जाती थी। ज्योति की भारत से निकाले गए पाकिस्तानी अफसर दानिश से नजदीकी थी। उसके यूट्यूब चैनल ट्रैवल विद जो पर अपलोड किए गए वीडियो से ही इस बात का पता चला। इसके बाद पूछताछ में ज्योति ने इस बात की पुष्टि की। शशांक कुमार ने कहा- केंद्रीय एजेंसियों से मिले इनपुट के आधार पर ज्योति को गिरफ्तार किया गया है। वह पाकिस्तान में आईएसआई के संपर्क में थी। पुलिस उसके बैंक खातों, मोबाइल और लैपटॉप की जांच कर रही है।

मायावती ने भतीजे को चीफ नेशनल को-ऑर्डिनेटर बनाया

लखनऊ/दिल्ली (एजेंसी)। बसपा सुप्रीमो मायावती ने एक बार फिर भतीजे आकाश आनंद को बड़ी जिम्मेदारी दी है। आकाश को चीफ नेशनल को-ऑर्डिनेटर बनाया है। यह नंबर-2 की पोजिशन है। यानी, मायावती के बाद अब पार्टी में आकाश होंगे।

आकाश को अब तक का सबसे बड़ा पद दिया गया है। पार्टी ने पहली बार चीफ नेशनल को-ऑर्डिनेटर का पद बनाया है। इससे पहले आकाश नेशनल को-ऑर्डिनेटर थे।

बसपा तीन हिस्सों में बंटी है। उत्तर भारत, पूर्वोत्तर और दक्षिण भारत। इसे तीन नेशनल को-ऑर्डिनेटर देखते हैं। तीन नेशनल को-ऑर्डिनेटर राजा राम, रामजी गौतम और रणधीर सिंह बेनीवाल हैं। अब ये तीनों आकाश को रिपोर्ट करेंगे। 16 महीने में मायावती ने आकाश को दो बार नेशनल को-ऑर्डिनेटर और उत्तराधिकारी बनाया था। लेकिन, दोनों ही बार हटा दिया गया। आकाश को 3 मार्च को पार्टी से निष्कासित कर दिया गया था। 40 दिन बाद, सार्वजनिक रूप से माफी मांगने के बाद मायावती ने उन्हें पार्टी में वापस लिया था। इसके बाद से ही उन्हें पार्टी में बड़ा पद मिलने की संभावना जताई जा रही थी।

कैथल में पाकिस्तानी जासूस से एनआईए की पूछताछ

कैथल (एजेंसी)। कैथल में शुक्रवार को पकड़े गए पाकिस्तानी जासूस देविंदर सिंह (25) से पूछताछ करने के लिए एनआईए व मिलिट्री इंटेलिजेंस की टीम रविवार को जिले में पहुंची। टीम ने आरोपी से मामले से जुड़े कई पहलुओं पर पूछताछ की। वह आईएसआई के संपर्क में कैसे आया और उसने क्या-क्या सूचनाएं साझा की, इस बारे में जानकारी जुटाने का प्रयास किया गया। एसपी आस्था मोदी ने बताया कि मामले की जांच के लिए टीम कैथल आई थी। आरोपी से मामले के बारे में पूछताछ की गई और तथ्य जुटाए गए। उधर, मामले को लेकर एसआईटी का गठन किया गया है। इसकी अध्यक्षता डीएसपी गुरविंदर सिंह को दी गई है।

कांग्रेस विधायक ने मुख्यमंत्री को बताया कलयुग का देवता

झुंझुनूं (एजेंसी)। सूरजगढ़ से कांग्रेस विधायक श्रवण कुमार ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की तारीफ की है। उन्होंने सीएम भजनलाल को कलयुग का देवता बताया है।

विधायक ने कहा- आपने (सीएम) वो काम कर दिया है, जो धरती पर कोई नहीं कर सकता। मैं जीवनभर आपका आभारी रहूंगा।

दरअसल, झुंझुनूं जिले के सूरजगढ़ और उदयपुरवाटी विधानसभा क्षेत्र के लिए शुक्रवार को कुंभाराम लिफ्ट नहर परियोजना का 1092 करोड़ रुपए का बजट मंजूर कर वर्क ऑर्डर जारी कर दिया।

इसके बाद शनिवार को 6 बार के विधायक श्रवण कुमार ने अपने आवास से सीएम को मोबाइल से कॉल किया। उनका सीएम से बात करने का यह वीडियो रविवार को सामने आया। विधायक श्रवण कुमार ने फोन पर सीएम से कहा- इस ऐतिहासिक निर्णय के लिए आभार व्यक्त करता हूं। आपने वो काम कर दिया, जो धरती पर कोई नहीं कर सकता।

यह परियोजना सूरजगढ़ और उदयपुरवाटी दोनों विधानसभा क्षेत्रों के लिए वरदान है। मुख्यमंत्री ने जवाब दिया- जल्द ही आपको मिलने के लिए बुलाता हूं।

ऑपरेशन सिंदूर- पाकिस्तान की पोल खोलेगा 59 सदस्यों का डेलिगेशन

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने शनिवार देर रात 59 सदस्यों वाले डेलिगेशन की घोषणा की है। इसमें 51 नेता और 8 राजदूत हैं। एनडीए के 31 और 20 दूसरे दलों के हैं, जिसमें 3 कांग्रेस नेता भी हैं।

ये डेलिगेशन दुनिया के बड़े देशों, खासकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सदस्य देशों का दौरा करेगा। वहां ऑपरेशन सिंदूर और पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद पर भारत का रुख रखेगा।

डेलिगेशन कब रवाना होगा, फिलहाल इसकी जानकारी सामने नहीं आई है। हालांकि, डेलिगेशन के 23 या 24 मई को भारत से रवाना होने की बात कही जा रही है।

पाकिस्तान ने आतंकवाद नहीं रोका तो सिंधु नदी का एक बूंद पानी भी नहीं मिलेगा-अमित शाह

अहमदाबाद (एजेंसी)। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह गुजरात दौरे के दूसरे दिन अहमदाबाद पहुंचे। यहां साइंस सिटी में गुजरात स्टेट सहकारी संघ कार्यक्रम में शामिल हुए। इसके बाद अहमदाबाद में 1692 करोड़ की लागत की परियोजनाओं का लोकार्पण व शुभारंभ किया। शाम 6.30 पर उन्होंने अहमदाबाद में पल्लव ब्रिज का लोकार्पण किया और कॉर्पोरेशन प्लॉट में जनसभा को संबोधित किया। अमित शाह ने कहा कि जब पीएम मोदी ने देश को संबोधित किया तो उन्होंने साफ कहा था कि सिंधु नदी और खून एक साथ नहीं बहेगा। यदि

आतंकवाद को नहीं रोका गया तो आपको सिंधु नदी से एक बूंद पानी भी नहीं मिलेगा। व्यापार और आतंकवाद एक साथ नहीं चल सकते। यदि आप आतंकवाद को पनाह देना चाहते हैं तो सारा व्यापार और कारोबार खत्म कर दीजिए। प्रधानमंत्री ने कहा था कि हम बातचीत के लिए तैयार हैं, लेकिन अगर बात होगी तो वह पीओके को वापस लेने और आतंकवाद को खत्म करने के लिए होगी।

हमारी ब्रह्मोस ने पाकिस्तानी एयरबेस को तबाह किया गृहमंत्री ने आगे कहा- नरेंद्र मोदी ने 2047 तक हर क्षेत्र में नंबर 1 बनने का बीड़ा उठाया है। आज का युवा हमारी ब्रह्मोस मिसाइल के बारे में जान रहा है। हमारी ब्रह्मोस मिसाइल ने पाकिस्तानी एयरबेस को तबाह किया। आतंकी मसूद अजहर समेत आतंकियों के ठिकानों को खत्म कर दिया। गांधीनगर लोकसभा की ओर से मैं प्रधानमंत्री जी और सेना के जवानों को बधाई देता हूं।

हांसी में फिर पकड़े 26 बांग्लादेशी

हांसी (एजेंसी)। हिसार जिले के हांसी में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी नागरिकों को हिरासत में लिया गया है। एक सप्ताह के अंदर यह दूसरा मामला है। शहर थाना पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार हांसी-तोशाम रोड स्थित कोहिनूर ईंट भट्ठे से शनिवार 26 बांग्लादेशी नागरिकों को पकड़ा है। इनमें 8 पुरुष, 5 महिलाएं और 13 बच्चे शामिल हैं। सभी को शहर थाना हांसी लाकर पूछताछ की गई। रात को हांसी की एक धर्मशाला में इन सभी नागरिकों को कड़ी सुरक्षा के साथ ठहराया गया। गौरतलब है कि पिछले रविवार को ही हांसी में 39 बांग्लादेशी नागरिकों की

गिरफ्तारी हुई थी, जिससे प्रशासनिक महकमे में हड़कंप मच गया था। जिन्हें बांग्लादेश बॉर्डर पर बीएसएफ के हवाले कर टीम शनिवार देर रात ही लौट रही है। पुलिस और खुफिया एजेंसियां अब हांसी के विभिन्न ईंट भट्ठों की जांच कर रही हैं, क्योंकि यह आशंका जताई जा रही है कि इन जगहों पर विदेशी नागरिकों को मजदूरी पर रखा जा रहा है। हांसी के पुलिस अधीक्षक अमित यशवर्धन के अनुसार, पकड़े गए सभी नागरिकों की जांच की जा रही है और इन्हें भी कागजी कार्रवाई पूरी करने के बाद बॉर्डर पर बीएसएफ के हवाले किया जाएगा।

केएल राहुल की बैटिंग पोजिशन में हो सकता है बदलाव

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली कैपिटल्स की टीम आईपीएल के बचे हुए अपने तीन मैचों के लिए अपने बैटिंग ऑर्डर में बदलाव कर सकती है। दिल्ली कैपिटल्स की टीम 11 मैचों में 6 जीत के साथ पॉइंट्स टेबल में पांचवें स्थान पर है। अक्षर पटेल की कप्तानी वाली टीम में केएल राहुल बतौर ओपनर वापसी कर सकते हैं। दिल्ली की टीम ने जारी सीजन में ओपनिंग जोड़ी को लेकर कई बदलाव किए हैं। दिल्ली कैपिटल्स के स्टार बल्लेबाज केएल राहुल ने 10 मैच खेले हैं, इस दौरान उन्होंने एक बार पारी की शुरुआत की है दो बार तीन नंबर पर और सात मैचों में चौथे नंबर पर बल्लेबाजी की। उन्होंने मध्यक्रम में अच्छा प्रदर्शन किया लेकिन मैनेजमेंट अब ओपनिंग जोड़ी में बदलाव करने के मूड में नहीं है और इस वजह से पावरप्ले में राहुल के अनुभव का इस्तेमाल करना चाहता है। खराब फॉर्म से जूझ रहे जैक मैक्गार्क और चोटिल फाफ डुप्लेसी के कारण से दिल्ली को मजबूरी में कई बदलाव करने पड़े।

दिल्ली कैपिटल्स की टीम ने आईपीएल 2025 में बेहतरीन शुरुआत की थी। लेकिन फिर कुछ मैच गंवाए और इस कारण से प्लेऑफ की रेस में थोड़ा पीछे रह गई है। केएल राहुल आईपीएल 2025 में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ियों की लिस्ट में 11वें नंबर पर हैं। राहुल ने 10 मैचों में 381 रन बनाए हैं।

बारिश के कारण रद्द हुआ आरसीबी-केकेआर का मुकाबला

नई दिल्ली (एजेंसी)। 1 हफ्ते बाद फिर से शुरू हुए आईपीएल 2025 की शुरुआत मायूसी भरी रही। दरअसल, आरसीबी और केकेआर का मैच बारिश के कारण रद्द हो गया है। बेंगलुरु में लगातार बारिश के कारण टॉस भी नहीं हो पाया। ये मैच विशेष रूप से केकेआर के लिए बेहद अहम था क्योंकि वह प्लेऑफ से महज एक मैच दूर थी। और उसने लगभग प्लेऑफ में अपना स्थान पक्का कर लिया है। बेंगलुरु के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में फैंस आरसीबी और केकेआर की भिड़ंत देखने के लिए तरस गए। कोहली की टेस्ट रिटायरमेंट के बाद मैदान में काफी फैंस सफेद जर्सी पहन कर आए थे, लेकिन वो एक पल के लिए भी विराट कोहली को मैदान पर नहीं देख पाए।

वहीं ये बारिश कोलकाता नाइट राइडर्स के लिए विलेन साबित हुई है। केकेआर के लिए ये मैच जीतना बेहद जरूरी था क्योंकि आरसीबी को हराने पर ही उसकी प्लेऑफ की उम्मीदें जीवित रह सकती थीं। अब केकेआर के 13 मैचों में पांच जीत के बाद 12 अंक हो गए हैं। अब उसका एकही मैच शेष है जिसे जीतकर भी वह प्लेऑफ के लिए क्वालिफाई नहीं कर पाएगी। उसे जीतकर उसके 14 अंक ही होंगे जो कि नाकाफी साबित होगा।

वहीं आरसीबी के मैच रद्द होने से 17 अंक हो गए हैं और वह पॉइंट्स टेबल के टॉप पर पहुंच गई है। हालांकि, आरसीबी ने अभी तक अंतिम-4 में जगह पक्की नहीं की है। इतिहास के अनुसार, साल 2016 से आरसीबी को चिन्नास्वामी स्टेडियम में केकेआर पर जीत नहीं मिली है और आज का मैच रद्द होने से ये सिलसिल बरकरार है।

राहुल द्रविड़ ने रोहित शर्मा को दी बधाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। मुंबई क्रिकेट संघ ने वानखेड़े स्टेडियम पर भारतीय वनडे टीम के कप्तान रोहित शर्मा के नाम के स्टैंड का उद्घाटन किया। शनिवार को भारत के पूर्व कोच राहुल द्रविड़ और राजस्थान, मुंबई इंडियंस के कई खिलाड़ियों ने रोहित शर्मा को इस उपलब्धि पर बधाई दी। रोहित शर्मा ने हाल ही में टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लिया है और एमसीए ने महान क्रिकेटर के सम्मान में उनके नाम पर एक स्टैंड का नाम रखने का फैसला किया। द्रविड़ ने कहा कि ये स्टैंड भारत और मुंबई क्रिकेट में रोहित शर्मा के योगदान का पुरस्कार है। मुंबई इंडियंस द्वारा शेयर वीडियो में राहुल द्रविड़ ने कहा कि, रोहित लगता है आपने इतने छक्के लगाए कि उन्हें एक स्टैंड का नाम आपके नाम पर रखना पड़ा। लेकिन नहीं, आपको बधाई। मुझे पता है कि आपको यहां खेलना पसंद है। मुझे यकीन है कि आप वहां कुछ बेहतरीन प्रदर्शन करना चाहते थे, जो आपने किया। मुझे यकीन नहीं है कि आपने अपने नाम पर एक स्टैंड का नाम रखने का सपना देखा था। लेकिन अब ऐसा है और आपके नाम पर एक स्टैंड का नाम रखा गया है मुझे लगता है कि ये मुंबई और भारतीय क्रिकेट दोनों में आपके योगदान का पुरस्कार है।

प्रधानमंत्री ने की नीरज चोपड़ा की तारीफ

नई दिल्ली (एजेंसी)। सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर पीएम मोदी ने लिखा कि, भारत खुश और गौरवान्वित है। पीएम ने लिखा कि, बेहतरीन उपलब्धि। दोहा डायमंड लीग 2025 में 90 मीटर का आंकड़ा पार करने और अपना सर्वश्रेष्ठ व्यक्तिगत थ्रो हासिल करने के लिए नीरज चोपड़ा को बधाई। ये उनके अथक समर्पण, अनुशासन और जुनून का नतीजा है। नीरज ने शुक्रवार को दोहा डायमंड लीग में 90.2 ी के जूलियन वेबर ने अपने अंतिम प्रयास में91 मीटर दूर भाला फेंका और पहला स्थान हासि ने आखिरी प्रयास में 91.06 मीटर का थ्रो फेंका। उनके मौजूदा कोच चेक गणराज्य के यान जेलेज्नी 90 मीटर से ज्यादा का थ्रो फेंकने वाला भालाफेंक खिलाड़ियों में टॉप पर हैं।

टोक्यो ओलंपिक चैंपियन चोपड़ा 90 मीटर पार करने वाले दुनिया के 25वें और एशिया के तीसरे खिलाड़ी बन गए हैं।

नीरज चोपड़ा ने आखिरकार 90 मीटर की बाधा पर की, लेकिन दोहा डायमंड लीग में दूसरे स्थान पर रहे

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के स्टार भालाफेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा ने आखिरकार 90 मीटर की बाधा पार करके 90.23 मीटर का थ्रो फेंका लेकिन डायमंड लीग के दोहा चरण में शुक्रवार को जर्मनी के जूलियन वेबर के बाद दूसरे स्थान पर रहे। वेबर ने अपने आखिरी प्रयास में 91 . 06 मीटर का थ्रो फेंका। इससे पहले तक चोपड़ा शीर्ष पर चल रहे थे। वेबर ने भी पहली बार 90 मीटर से अधिक का थ्रो फेंका है और ऐसा करने वाले वह दुनिया के 26वें खिलाड़ी बन गए। दो बार के विश्व चैम्पियन और पेरिस ओलंपिक के कांस्य पदक विजेता ग्रेनाडा के एंडरसन पीटर्स 84 . 65 मीटर के थ्रो के साथ तीसरे स्थान पर रहे। चोपड़ा ने बाद में कहा ,'' मैं 90 मीटर की बाधा पार करके बहुत खुश हूं लेकिन यह खट्टा मीठा अनुभव रहा।'' उन्होंने कहा ,'' मेरे कोच जान जेलेंजी ने कहा कि आज मैं 90 मीटर पार कर सकता हूं। हवा ने मदद की और मौसम थोड़ा गर्म होने से भी मदद मिली। मैने जूलियन से भी कहा था कि हम 90 मीटर थ्रो कर सकते हैं। मैं उसके लिये बहुत खुश हूं।''

उन्होंने कहा ,'' मेरा मानना है कि आने वाले टूर्नामेंटों में इससे आगे का थ्रो कर सकता हूं। हम कुछ पहलुओं पर काम करेंगे और इस सत्र में फिर 90 मीटर पार करेंगे।' भारत के किशोर जेना 78 . 60 मीटर का थ्रो फेंककर आठवें स्थान पर रहे।

चोपड़ा ने 88.44 मीटर से शुरूआत की और दूसरा थ्रो फाउल रहा दो ओलंपिक पदक जीत चुके 27 वर्ष के चोपड़ा ने तीसरे प्रयास में 90 . 23 मीटर का थ्रो फेंका। इसके बाद उन्होंने 80 . 56 मीटर , फाउल और 88.20 मीटर के थ्रो फेंके। उनके मौजूदा कोच चेक गणराज्य के जान जेलेंजी 90 मीटर से अधिक का थ्रो फेंकने वाले भालाफेंक खिलाड़ियों में शीर्ष पर हैं।

तोक्यो ओलंपिक चैम्पियन चोपड़ा 90 मीटर पार करने वाले दुनिया के 25वें और एशिया के तीसरे खिलाड़ी बन गए। ओलंपिक चैम्पियन पाकिस्तान के अरशद नदीम (92 . 97) और चीनी ताइपै के चाओ सुन चेंग (91 . 36) ही एशिया के दो अन्य खिलाड़ी हैं जो 90 मीटर से अधिक का थ्रो फेंक चुके हैं।

चोपड़ा ने पहली बार दोहा डायमंड लीग में 2018 में भाग लिया था जब वह 87 . 43 मीटर के थ्रो के साथ चौथे स्थान पर रहे थे। उन्होंने 2023 में यहां 88 . 67 मीटर का थ्रो फेंककर पहला स्थान हासिल किया और 2024 में 88 . 36 मीटर के थ्रो के साथ दूसरे स्थान पर रहे थे।

क्या आईपीएल 2025 का फाइनल मुकाबला कोलकात में खेला जाएगा?

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 के फाइनल के वेन्यू को लेकर चर्चा बनी हुई है। आईपीएल की शुरुआत में ही तय था कि फाइनल कोलकाता के ईडन गार्डन्स में होगा। हालांकि, भारत-पाकिस्तान तनाव के बाद आईपीएल सस्पेंड होने के बाद तय नहीं है कि फाइनल किस मैदान पर होगा। ऐसे में अब पूर्व क्रिकेटर सौरव गांगुली ने जवाब देते हुए कहा कि फाइनल पहले से ही तेय जगह ईडन गार्डन्स में होगा या नहीं। इस दौरान गांगुली ने कहा कि, हम लोग कोशिश कर रहे हैं। बीसीसीआई के साथ बातचीत चल रही है। फाइनल को यहां से हटाना इतना आसान नहीं है। भारत-पाक तनाव के बाद एक बार फिर से आईपीएल 2025 की शुरुआत हुई है। इसके बाद बाकी बचे हुए मैचों का नया शेड्यूली जारी किया गया था। बीसीसीआई की तरफ से सिर्फ लीग मैचों का ही वेन्यू बताया गया था जबकि प्लेऑफ और फाइनल के लिए अभी तक वेन्यू फाइनल नहीं हुआ है। आईपीएल 2025 के बचे लीग मैच बेंगलुरु, लखनऊ, जयपुर, दिल्ली, अहमदाबाद और मुंबई में कराने का फैसला किया गया था। जिसके बाद से ही सवाल उठ रहे हैं कि इस सीजी का फाइनल मुकाबला कहां खेला जाएगा।

वहीं जब गांगुली से पूछा गया कि, बाकी बचे मैचों के लिए वेन्यू में कोलकाता का नाम क्यों नहीं था तो उन्होंने कहा कि, केकेआर के सभी 7 होम गेम्स खेल लिए थे। इस कारण से मैदान का नाम नहीं था, अगर उन्हें भी मैच बाकी रहते तो ईडन गार्डन्स का नाम जरूर होता।

गुजरात टाइटंस 22 मई को लैवेंडर रंग की जर्सी में आएगी नजर

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 में गुजरात टाइटंस एक बार फिर सामाजिक जागरुकता को बढ़ावा देने के लिए एक खास पहल करने जा रही है। इस बार टीम कैंसर के खिलाफ लड़ाई में अपना समर्थन दिखाने के लिए 22 मई को लैवेंडर कलर की जर्सी पहनेगी। ये मैच अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ शाम 7.30 बजे से खेला जाएगा।

गुजरात टाइटंस ने इस खास पहल की घोषणा करते हुए कहा कि, ताकत सिर्फ खेल में नहीं होती, बल्कि किसी उद्देश्य के लिए खड़े होने में भी होती है। टीम ने अपने फैंस से इस मुहिम में शामिल होने की अपील की है और कैंसर जैसी गंभीर बीमारी के खिलाफ एकजुट होने का संदेश भी दिया है। लैवेंडर रंग को कैंसर जागरूकता का प्रतीक माना जाता है और इसी जर्सी के जरिए टीम न केवल जारुकता फैलाना चाहती है बल्कि उन लोगों को प्रेरित करना चाहती है जो इस बीमारी से लड़ रहे हैं।

ये पहली बार नहीं है जब आईपीएल में किसी टीम ने सामाजिक मुद्दों को लेकर इस तरह की पहल की हो। जीटी पहले भी अपनी जर्सी और मंच का इस्तेमाल सामाजिक संदेश देने के लिए कर चुकी है। इस बार का ये कदम कैंसर से प्रभावित लोगों और उनके परिवारों के लिए एक पॉजिटिव संदेश लेकर जाएगा।

रोहित ने मजाकिया अंदाज में प्रशंसक को मुक्का दिखाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय एकदिवसीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने हाल ही में टेस्ट प्रारुप से संन्यास लिया है। इसके बाद रोहित का वानखेडे स्टेडियम में सम्मान किया गया। इस दौरान रोहित ने माता पिता के त्याग और बलिदान को भी याद किया। वे समारोह में अपने प्रशंसकों से भी मिले। इस दौरान वह एक प्रशंसक को हंसी-मजाक में मुक्का दिखाते दिखे। इसके अलावा छोटे भाई को डांटने का उनका वीडियो भी वायरल हुआ है। रोहित ने अपने एक प्रशंसक दीपक पटेल के साथ भी हंसी मजाक किया। दीपक को भारतीय झंड लहराते हुए देखकर रोहित ने कुछ समय के लिए उनसे बातचीत की और एक तस्वीर भी खिंचवाई। रोहित जब स्टेडियम में मंच की ओर बढ़ रहे थे तो तभी एक प्रशंसक ने उन्हें आवाज दी। वह रोहित से हाथ मिलाने का प्रयास कर रहा था। तब रोहित ने आगे बढ़कर उससे हाथ मिलाया। मुंबई ने स्टेडियम में रोहित ने माता-पिता और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के साथ खड़े होकर स्विच दबाया जिससे रोहित शर्मा स्टैंड का अनावरण हुआ। इस पल को रंगीन आतिशबाजी ने और भी खूबसूरत बना दिया। इस रोहित की पत्नी, रितिका बेहद खुश नजर आयीं। इससे पहले इस स्टेडिया में पूर्व भारतीय कप्तान अजीत वाडेकर और पूर्व बीसीसीआई अध्यक्ष शरद पवार के नाम पर भी स्टैंड बना है। रोहित ने कहा कि अपने नाम पर स्टैंड बनना और दिग्गजों के साथ नाम आने की उन्होंने कल्पन तक नहीं की थी।

आरसीबी के पास इस बार खिताब जीतने का सुनहरा मौका-सुरेश रैना

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) शानदार लय में नजर आ रही है और पूर्व भारतीय क्रिकेटर सुरेश रैना का मानना है कि इस बार टीम के पास खिताब जीतने का बेहतरीन मौका है। विराट कोहली की कप्तानी में 2016 में फाइनल तक पहुंची बेंगलुरु की टीम उस साल सनराइजर्स हैदराबाद से हार गई थी, लेकिन अब टीम के प्रदर्शन में निखार आया है। रैना ने कहा कि बेंगलुरु इस बार अलग स्तर की क्रिकेट खेल रही है। उन्होंने चिन्नास्वामी स्टेडियम में कम स्कोर 150 और 136 रन का सफलतापूर्वक बचाव कर दिखाया है, जो उनके गेंदबाजी आक्रमण की मजबूती को दर्शाता है। इसके साथ ही नए कप्तान के नेतृत्व में टीम ने चेन्नई सुपर किंग्स जैसी मजबूत टीम को दो बार हराया है, जो उनके आत्मविश्वास और रणनीति का प्रमाण है।

रैना ने आगे कहा कि ड्रेसिंग रूम में पॉजिटिव माहौल है और खिलाड़ी एकजुटता के साथ खेल रहे हैं। उन्होंने यह भी जोड़ा कि मुंबई इंडियंस, गुजरात टाइटंस और पंजाब किंग्स जैसी टीमें भी अच्छी फॉर्म में हैं, लेकिन यह साल विराट कोहली का हो सकता है। उन्होंने उम्मीद जताई कि कोहली इस साल आरसीबी को पहली बार आईपीएल ट्रॉफी दिला सकते हैं, जिससे 18 साल का इंतजार खत्म हो सकता है। रैना ने सोमवार को एक ट्वीट में भी कोहली की जमकर तारीफ की थी। उन्होंने लिखा, आपकी टेस्ट क्रिकेट में जुनून और नेतृत्व ने लाखों लोगों को प्रेरित किया है, भाई! प्यार और सम्मान। कोहली ने हाल ही में टेस्ट क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की थी और अब 10 दिन के ब्रेक के बाद वे आईपीएल में वापसी कर रहे हैं।

वानखेड़े स्टेडियम में रोहित शर्मा स्टैंड का हुआ उद्घाटन, फडणवीस और शरद पवार भी रहे मौजूद

नई दिल्ली (एजेंसी)। वानखेड़े स्टेडियम में रोहित शर्मा स्टैंड का अनावरण किया गया। भारतीय वनडे पुरुष क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा और उनका परिवार, महाराष्ट्र के सीएम देवेंद्र फडणवीस, एनसीपी-एससीपी प्रमुख शरद पवार और अन्य लोग भी मौजूद रहे। मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन (एमसीए) वानखेड़े में चार नए स्थानों का औपचारिक रूप से उद्घाटन कर रहा है - शरद पवार स्टैंड, रोहित शर्मा स्टैंड, अजीत वाडेकर स्टैंड और पूर्व एमसीए अध्यक्ष अमोल काले की याद में एमसीए ऑफिस लाउंज।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने कहा कि मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन ने एक बेहतरीन फैसला लिया है। हम उन लोगों का सम्मान कर रहे हैं जिन्होंने हमें गौरवान्वित किया है। बीसीसीआई के अध्यक्ष के रूप में, एमसीए के अध्यक्ष के रूप में शरद पवार ने क्रिकेट के विकास के लिए जो काम किया है, उसने निश्चित रूप से उस मंच में बहुत बड़ा योगदान दिया है जिस पर हम आज क्रिकेट देख रहे हैं और इसलिए, यहां स्टैंड पर उनका नाम देना एमसीए द्वारा लिया गया एक बहुत ही सही फैसला है। मैं इसके लिए उन्हें बधाई देता हूं। भारतीय वनडे पुरुष क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने कहा कि आज जो होने जा रहा है, मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। बचपन में मैं मुंबई के लिए, भारत के लिए खेलना चाहता था। कोई भी इस बारे में नहीं सोचता। खेल के महान खिलाड़ियों में अपना नाम दर्ज कराना। उन्होंने कहा कि मैं इसे शब्दों में बयां नहीं कर सकता। यह इसलिए भी खास है क्योंकि मैं अभी भी खेल रहा हूं। मैंने दो प्रारूपों से संन्यास ले लिया है, लेकिन मैं अभी भी एक प्रारूप खेल रहा हूं।

शर्मा ने कहा कि 21 तारीख को जब मैं यहां आऊंगा और मुंबई इंडियंस का प्रतिनिधित्व करते हुए दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ खेलूंगा, तो यह एक अवास्तविक एहसास होगा और एक स्टैंड लेना, यह एक बहुत ही खास एहसास होगा। जब भी ऐसा होगा, तो देश का प्रतिनिधित्व करते हुए यह और भी खास हो जाएगा। भारत यहां जिस भी टीम से खेलेगा, यह और भी खास हो जाएगा। मैं इतने सारे लोगों, खासकर मेरे परिवार, मेरी माँ और पिताजी, मेरे भाई, उनकी पत्नी और मेरी पत्नी, जो यहां मौजूद हैं, के सामने इस बड़े सम्मान को पाकर आभारी हूं। उन्होंने मेरे लिए जो भी त्याग किया, उसके लिए मैं बहुत आभारी हूं। मैं अपनी खास टीम, मुंबई इंडियंस का भी शुक्रिया अदा करता हूं।

मामा के लड़के को बचाने में गई दो सागे भाइयों की जान

बैंककर्मी समेत तीन युवक नदी में डूबे

अभिषेक मिश्रा | अभय तिवारी | अमन तिवारी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज जिले में तीन भाइयों की नदी में डूबने से मौत हो गई। हादसा रविवार सुबह करीब 10 बजे हुआ। तीनों भाई पैपखार गांव में निहाई नदी में नहाने गए थे। करीब दो घंटे बाद तीनों को नदी से निकाला जा सका। परिजन अस्पताल लेकर पहुंचे। जहां डॉक्टरों ने तीनों को मृत घोषित कर दिया।

मृतकों में दो सगे भाई अमन तिवारी (18), अभय तिवारी (17) समेत उनके मामा का बेटा अभिषेक मिश्रा (24) शामिल हैं।

रविवार सुबह तीनों नहाने के लिए निहाई नदी गए थे। जहां अभिषेक गहरे पानी में चला गया। उसे बचाने के लिए अमन और अभय भी पहुंचे। लेकिन गहराई का अंदाजा नहीं होने से वे भी डूब गए।

तीनों युवकों की चीख-पुकार सुनकर स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे। पुलिस को सूचना दी। कड़ी मशक्कत के बाद शव बाहर निकाले जा सके। पोस्टमॉर्टम मऊगंज सिविल अस्पताल में किया गया। अमन-अभय के पिता अनिल तिवारी पेशे से रजिस्ट्री लेखक हैं।

अभिषेक मिश्रा मऊगंज के दुगोली गांव का रहने वाला था। बड़ा भाई सत्य प्रकाश मिश्रा आईआईटी की तैयारी कर रहा है। सबसे बड़ी बहन है। अभिषेक एचडीएफसी बैंक की मऊगंज ब्रांच में क्लर्क था। शनिवार को ड्यूटी के बाद बुआ के घर पैपखार आया था। वहीं, अमन (18) और अभय (17) बारहवीं क्लास में पढ़ रहे थे।

सतना में चेक डैम में नहाने गए युवक की मौत

मोटर के सक्शन से खिंचता चला गया; जेसीबी से तोड़कर निकाला शव

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना के मझगवां थाना क्षेत्र के पटना गांव में स्थित सेहा नाला के चेक डैम में एक युवक की मौत हो गई। रविवार दोपहर को 25 वर्षीय धीरेन्द्र यादव नहाने के दौरान पानी खींचने वाली मोटर की चपेट में आ गए।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, युवक जैसे ही पानी में उतरा, वह गहरे गड्ढे और मोटर के दबाव में खिंचता चला गया। पानी में घंटों तलाश के बाद भी शव नहीं मिला। इसके बाद जेसीबी से चेक डैम की दीवार तोड़कर साढ़े तीन घंटे बाद शव को बाहर निकाला गया।

जानकारी के अनुसार, इंडो न्यूक्लियर प्राइवेट लिमिटेड ने पानी खींचने के लिए चेक डैम में करीब 15 फीट गहरा गड्ढा खुदवाया था। कंपनी ने कोई सुरक्षा व्यवस्था नहीं की थी। मृतक लालपुर चकर गांव का रहने वाला था और पटना गांव में एक तेरहवीं कार्यक्रम में शामिल होने आया था। परिजनों ने इंडो न्यूक्लियर प्राइवेट लिमिटेड पर लापरवाही का आरोप लगाया है। उन्होंने कंपनी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई और मुकदमा दर्ज करने की मांग की है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है।

छात्रा की घर में घुसकर हत्या, आरोपी ने भी की लगाई फांसी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले के थाना गढ़ अंतर्गत पुलिस चौकी गंगेव के ग्राम बेला में कक्षा नवमीं की छात्रा की घर में घुसकर हत्या की घटना सामने आई है। साथ ही आरोपी का भी घटना स्थल से कुछ दूर आम के पेड़ पर शव लटकता हुआ मिला है। एक साथ हुई दो मौतों से गांव में तनाव की स्थिति बनी हुई है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मौका मुआयना के बाद दोनों के शव को पीएम के लिए गंगेव सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेज दिया है। पुलिस द्वारा मार्ग कायम कर मामले की जांच की जा रही है। जानकारी के मुताबिक 14 वर्षीय मृतिका संध्या वर्मा अपनी दो बहनों के साथ घर पर ही थी। इसी दौरान सुबह करीब साढ़े 7 बजे गांव का ही छोटेलाल कोल उसके घर पहुंचा, जहां उसने पहले किशोरी का गला दबाया और फिर लोहे के खलवट्टे से उसके सिर पर हमला कर दिया। जिससे उसकी मौत हो गई। इस दौरान मृतिका की बहन और उनके बाबा ने बचाने का प्रयास किया। लेकिन आरोपी के सिर पर खून सवार था।

घटना के कुछ देर बाद ही आरोपी छोटेलाल का शव भी कुछ दूरी पर आम के पेड़ पर लटकता पाया गया। फ़िलहाल इस बड़ी बारदात के पीछे की वजह साफ नहीं हो पाई है।

मऊगंज में गांजा की डिलेवरी देने पहुंची दो महिला सहित चार गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज में पुलिस ने गांजा तस्करी के मामले में चाक बायपास रोड से दो महिलाओं समेत चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इनके पास से 20 किलो 900 ग्राम गांजा बरामद हुआ है, जिसकी कीमत लगभग 3 लाख है। पुलिस ने रविवार को ये जानकारी दी है।

दरअसल यह गंजा की खेप उड़ीसा से आई थी। जिसे महाराष्ट्र नागपुर से यात्री बस के जरिए मऊगंज लाया जा रहा था। पुलिस की पूछताछ दौरान महिलाओं ने कबूल किया कि उन्होंने इस महीने में मऊगंज के लगभग तीन चक्कर लगाए हैं। हर एक चक्कर का उन्हें 10 हजार रुपए तस्कर देते हैं।

महिलाओं को मेकअप करके सप्लाई देने भेजा जाता था: इस पूरे मामले की सबसे बड़ी बात यह है कि पहले पैसे की जरूरतमंद महिलाओं को ढूंढा जाता है फिर उनका मेकअप कराया जाता है। उन्हें ऐसे कपड़े पहनाए जाते हैं, जिन्हें देखकर ऐसा लगता है कि महिलाएं किसी शादी पार्टी के कार्यक्रम में शामिल होने जा रही हैं। शाहपुर थाना क्षेत्र के पहाड़ी निवासी राजू पटेल जो नागपुर में इन महिलाओं को गांजे की खेप देकर बस में बैठाता था। फिर इन महिलाओं के साथ मऊगंज वार्ड क्रमांक 7 निवासी विनोद गुप्ता बस में बैठकर मऊगंज जाता था।

एसपी दिलीप सोनी के अनुसार, शनिवार को मुखबिर से सूचना मिली थी। मऊगंज निवासी विनोद गुप्ता उर्फ लल्लू दो महिलाओं के साथ उड़ीसा से गांजा लाकर राजेन्द्र गुप्ता उर्फ पंडित को देने वाला था। सूचना के आधार पर पुलिस ने कार्रवाई की। पुलिस ने आरोपियों से 3 मोबाइल और एक दोपहिया वाहन भी जब्त किया है। गिरफ्तार आरोपियों में विनोद उर्फ लल्लू गुप्ता (40 वर्ष) और राजेन्द्र उर्फ पंडित गुप्ता (41 वर्ष) दोनों मऊगंज के रहने वाले हैं।

आरोपी महिलाएं सिंगरौली की रहने वाली: दो महिला आरोपी नेहा बंसल (32 वर्ष) और दीपू बंसल (30 वर्ष) ग्राम बीछी, थाना गढ़वा, जिला सिंगरौली की निवासी हैं। ये तीन बार गांजे की सप्लाई भी दे चुकी हैं। सभी आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज कर लिया गया है और विवेचना जारी है।

सतना में नरवाई की आग से अनाज और भूसा जलकर राख

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना के बाबूपुर क्षेत्र के फूटोंधा गांव में रविवार को नरवाई की आग ने गंभीर रूप ले लिया। तेज हवाओं और गर्मी के कारण आग तेजी से फैल गई। आग की चपेट में आने से किसानों की करीब आधा दर्जन अहरियां जल गईं।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, आग पहले खेतों में लगी और कुछ ही समय में यह गांव की तरफ बढ़ने लगी। ग्रामीणों ने तुरंत फायर ब्रिगेड को सूचना दी। फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंचकर आग पर काबू पा लिया। जिससे बड़ा हादसा टल गया। आग से किसानों को आर्थिक नुकसान हुआ है। अहरियों में रखा अनाज और भूसा पूरी तरह जल गया। अभी तक आग लगने के कारण का पता नहीं चल पाया है। फिलहाल जांच की जा रही है कि आग कैसे लगी।

सेमरिया में पानी के विवाद में जमकर चले लाठी-डंडे

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले के सेमरिया थाना क्षेत्र के कुम्हरहा गांव में पानी को लेकर हुए विवाद में दो पक्षों के बीच जमकर लाठी-डंडे चले। हमले में पति और पत्नी घायल हो गए। जिन्हे उपचार के लिए रविवार को रीवा के संजय गांधी अस्पताल लाया गया है। जानकारी के मुताबिक पानी भरने के विवाद में गांव के ही रमाकांत दाहिया और उसके परिवार के लोगों ने मिलकर मारपीट की। घायल केशव दाहिया के मुताबिक करीब 20 लोगों ने मिलकर उसके साथ मारपीट की है।

बताया गया कि शनिवार की दोपहर जब वह घर में खाना खा रहा था, तभी आरोपी अचानक उसके घर पहुंचे और मारपीट करने लगे। घटना के दौरान बीच बचाव करने पर उसकी पत्नी को भी आरोपियों ने लाठी डंडों से जमकर पीटा। पीड़ित पक्ष ने सेमरिया थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई है।

देर रात हादसे में युवक गंभीर घायल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज जिले के नईगढ़ी-गढ़ मार्ग पर रिमारी के पास शनिवार देर रात अज्ञात वाहन ने एक शख्स को टक्कर मार दी। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। जानकारी के मुताबिक राजेश कुमार मिश्रा एक वैवाहिक कार्यक्रम में शामिल होने नईगढ़ी जा रहे थे। इसी दौरान रिमारी के पास वे हादसे का शिकार हो गए। शंकरगढ़ थाना क्षेत्र के नारीबारी चौकी निवासी राजेश कुमार मिश्रा के सिर में गंभीर चोट आई है। पुलिस ने घायल को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नईगढ़ी में भर्ती कराया। जहां डॉक्टर्स ने संजय गांधी अस्पताल रीवा रेफर कर दिया है।

प्रभारी मंत्री की बैठक में कांग्रेसी विधायक की नो एंट्री

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा में प्रभारी मंत्री की बैठक में सेमरिया से कांग्रेस विधायक को नो एंट्री कर दी गई। इस बैठक के लिए उन्हें आमंत्रण नहीं दिया गया। यह बैठक रविवार शाम सर्किट हाउस में आयोजित की गई थी, जिसमें भाजपा के सभी विधायक और जिलाध्यक्ष समेत, प्रशासनिक अधिकारी शामिल हुए। इसके बाद सर्किट हाउस के सामने अभय मिश्रा कांग्रेस जिलाध्यक्ष राजेंद्र शर्मा और अन्य पदाधिकारियों के साथ जमीन पर बैठ गए।

ऐसे में बैठक के बीच विधायक सर्किट हाउस तो पहुंचे लेकिन वे मैदान पर बाहर ही बैठे रहे। जहां विधायक ने विधायकों की बैठक में खुद को शामिल न करने का आरोप लगाया। वहीं पूरे मामले प्रभारी मंत्री प्रहलाद पटेल ने सफाई दी और बैठक को भाजपा की कोर कमेटी की बैठक बताया। पूरे मामले में अभय मिश्रा ने कहा कि सरकार ने हमें यह अधिकार दिया है कि जनता के चुने हुए जनप्रतिनिधि होने के नाते हम जनता की बात को सरकार के समक्ष रखें। शासकीय कार्यों और बैठकों में पक्ष और विपक्ष दोनों का होना बहुत जरूरी है।

अगर प्रदेश के स्थानांतरण नीति पर बात हो रही है तो उसमें किसी पार्टी विशेष की उपस्थिति नहीं बल्कि सभी विधायकों की उपस्थिति होनी चाहिए। क्या रीवा के प्रभारी मंत्री होने के नाते प्रहलाद पटेल सेमरिया के प्रभारी मंत्री नहीं है।

अगर सेमरिया के भी प्रभारी मंत्री हैं तो फिर सेमरिया के चुने हुए जनप्रतिनिधि को बैठक में शामिल क्यों नहीं किया जा रहा। उन्होंने कहा मेरी कलेक्टर से बात हुई तो उन्होंने यह कहने की कोशिश की कि इसमें मेरी कोई भूमिका नहीं है। जैसा ऊपर से आदेश है ,उसी तारतम्य में कार्य किया जा रहा है। लोकतंत्र और विपक्ष की हत्या की जा रही है। विपक्ष के प्लेटफॉर्म को भी छीनने का प्रयास किया जा रहा है। वहीं पूरे मामले में प्रभारी मंत्री ने कहा कि ये बैठक भाजपा के कोर कमेटी की बैठक थी। इसलिए कांग्रेस विधायक को शामिल नहीं किया गया। आरोप पूरी तरह से झूठे हैं।

शराब पीकर हंगामा करने से रोका तो मारा दिया चाकू

युवक के पेट में आई चोट, रीवा रेफर; बचाने आए भाई के सिर पर मारी रॉड

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना सिटी कोतवाली क्षेत्र के खूंथी मोहल्ले में शनिवार रात घर के बाहर शराब पीकर गाली-गलौज करने से मना करने पर चाकूबाजी हो गई। घटना में दो भाई गंभीर रूप से घायल हो गए। एक को जिला अस्पताल से रीवा रेफर कर दिया गया है। पुलिस ने इस मामले में दो आरोपियों को रात में ही हिरासत में ले लिया है।

पुलिस के अनुसार खूंथी गली नंबर 2 निवासी नबी अहमद (34) पिता गुलाम नबी कुरैशी ने लगभग साढ़े 11 बजे अपने घर के बाहर शराब पीकर गाली-गलौज कर रहे आरोपी मदन शाह एवं मुन्ना शाह को मना किया। इस पर दोनों ने उस पर चाकू से हमला कर दिया। चाकू नबी अहमद के पेट में लगी। उसे बचाने आए छोटे भाई शाहबाज (31) के सर पर आरोपियों ने रॉड मार दी।

घटना की सूचना पर सिटी कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को जिला अस्पताल पहुंचाया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद नबी को संजय गांधी अस्पताल रीवा रेफर कर दिया गया है।उधर, आरोपी पक्ष का कहना है कि मारपीट पहले नबी लोगों ने शुरू की थी, जिसके बाद विवाद बढ़ गया। पुलिस फिलहाल दोनों ही पक्षों की शिकायत पर घटना की जांच कर रही है।

मऊगंज में बेकाबू पिकअप घर में घुसा, बाल-बाल बचे घरवाले

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज जिले में एक बेकाबू चार पहिया वाहन घर में घुस गया। हादसे में घरवाले बाल-बाल बच गए, लेकिन मकान क्षतिग्रस्त हो गया। घटना नईगढ़ी कस्बे के वार्ड क्रमांक 2 में रविवार तड़के करीब 4 बजे हुई। जब एक पिकअप वाहन मोहम्मद शरीफ उर्फ जुम्मन के घर में घुस गया। पिकअप वाहन ने घर की बाउंड्री को तोड़ते हुए आंगन में जा पहुंचा। उस वक्त परिवार के सदस्य आंगन में सो रहे थे। वाहन एक खंभे से टकरा गया। हादसे में कोई जनहानि नहीं हुई। घटना के बाद चालक मौके से फरार हो गया। सूचना मिलते ही आस-पड़ोस के लोग मौके पर पहुंच गए। वारदात को लेकर प्रधान आरक्षक रामकुमार ने बताया कि घटना में मकान को काफी नुकसान पहुंचा है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री ने मेधावी विद्यार्थियों को किया सम्मानित

'लगन और परिश्रम से बड़े से बड़ा लक्ष्य प्राप्त हो जाता है'

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले के प्रभारी मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल मंत्री पंचायत ग्रामीण विकास एवं श्रम विभाग ने मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया। प्रभारी मंत्री ने रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड के ग्राम पहड़िया में सेवियर सीनियर सेकेण्डरी स्कूल में आयोजित समारोह में स्कूल के कक्षा 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षा की मेरिट सूची के विद्यार्थियों को सम्मानित किया। इस अवसर पर मंत्री पटेल ने कहा कि हर विद्यार्थी अपने कैरियर और जीवन के लिए बड़े सपने देखता है। इन सपनों को पूरा करने के लिए लगातार प्रयास की आवश्यकता होती है। अपनी प्रतिभा और परिश्रम से विद्यार्थी सफलता के शिखर छू सकते हैं। लगन और परिश्रम से बड़े से बड़ा लक्ष्य प्राप्त हो जाता है। हमें जिस क्षेत्र में आगे बढ़ना है उसके लिए अभी से तैयारी करनी चाहिए। मंत्री पटेल ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि अपनी प्रतिभा के अनुरूप कैरियर का चुनाव करके सभी विद्यार्थी अच्छी सफलता प्राप्त करें। भावी पीढ़ी पर ही देश और प्रदेश को आगे ले जाने की जिम्मेदारी है। आपका कैरियर केवल आप के लिए ही नहीं पूरे समाज के लिए महत्वपूर्ण है। समारोह में विद्यार्थियों को सम्मान पत्र तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। प्रभारी मंत्री ने सबसे पहले प्रदेश की मेरिट सूची में चौथा स्थान प्राप्त करने वाली अंजली शर्मा को सम्मानित किया। समारोह में वरिष्ठ नेता वीरेन्द्र गुप्ता, अजय सिंह, स्कूल के संचालक शिक्षकगण तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कलेक्टर आज करेंगी टीएल पत्रों की समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल 19 मई को कलेक्ट्रेट सभागार में सुबह 11 बजे से आयोजित बैठक में टीएल पत्रों की समीक्षा करेंगी। बैठक में सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण, जल गंगा संवर्धन अभियान, पेयजल व्यवस्था की भी समीक्षा की जायेगी। सभी संबंधित अधिकारियों को बैठक में उपस्थित रहने के निर्देश दिये गये हैं।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।